प्रेमा पुस्तक माला

का

प्रथम पुष्प

राज संस्करण

प्रकाशक—

प्रेमा-पुस्तक-माला,

इण्डियन प्रेस,

जबलपुर—शाखा,

जबलपुर

प्रथम संस्करण

चार रुपया

मुद्रक

श्रीकमलाकर पाठक

अध्यक्ष- कर्मवीर प्रेस जबलपुर।

रुबाइयात
उमर ख़य्याम

[फ़िट्ज़रेल्ड कृत प्रथम अनुवाद से अनूदित]

अनुवादक

पं० केशवप्रसाद पाठक, बी० ए०

इंडियन प्रेस लिमिटेड

जबलपुर शाखा

जबलपुर

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रेमोपहार

श्री..

....

....

विषय-सूची

निवेदन—पण्डित केशव प्रसाद पाठक बी. ए.

भूमिका—पं० [illegible] शुक्ल एम. ए., एल एल. बी.

जीवनी—प्रोफेसर महेश प्रसाद शुक्ल एम. ए.

रुबाइयात उमर ख़ैयाम—पं० केशव प्रसाद पाठक बी ए.

टिप्पणी . .. ...

[illegible] . ...

चित्र-सूची

१ अनुवादक—पं० केशव प्रसाद पाठक बी. ए.

२ जाग प्रिये ! आकर प्रभात ने किया पलायित तारक दल

३ आ प्रियतमे ! ढाल प्याली में होने दे आसव का पान

४ इस कदम्ब के तले स्वल्प यदि पाता मैं आहार कहीं

५ सुमुखि ! देख सम्मुख पाटल यह कहता है क्या खिल खिल कर

६ यह रमणीय वनस्पति जिसकी मृदुल हरित से है विलसित

७ तब विभात श्याम से मैंने कातर स्वर में कहा पुकार

८ में विचारता जिम्न प्याली ने दिया क्षणस्थायी उत्तर

९ अभी ' रालय द्वार खुले थे क्षिति पर थी गोरज छाई

१० झगड़ा करें झगड़ता है यदि आपस में सब विज्ञ समाज

११ इस सरिता के तीर विहँसता है जब तक गुलाब अम्लान

१२ आह प्रिये ! कर-गत करने को अखिल प्रकृति का दुखद विधान

अनुवादक—पण्डित केशवप्रसाद पाठक, बी० ए०

निवेदन

अपने इस प्रथम प्रयास को पाठकों के सम्मुख रखते हुए मुझे कुछ संकोच होता है और कुछ आनंद। संकोच इस लिये कि संभव है यह अनुवाद अच्छा न बन पड़ा हो, इसमें यत्र तत्र भद्दी भूलें रह गई हों। आनंद इस लिये कि सरस्वती के पवित्र मंदिर में, मैं आज पहली बार पुजारी के रूप में प्रवेश कर रहा हूँ; पत्र-पुष्प प्रस्तुत हैं। उनमें चाहे वह सौंदर्य, सुगंध और सरसता न हो जो अन्य प्राचीन, परिचित पुजारियों की सामग्री में प्राप्त है पर हैं वे पूजनार्थ ही। सेवा और समर्पण के सद्भाव से प्रेरित होकर ही यह पुजारी उन्हें लेकर साहित्य-मंदिर में प्रवेश कर रहा है। आशा ही नहीं, मुझे विश्वास है दुधमुहे बच्चे के पहले पहले तोतले बोलों से जिस प्रकार मातृ-हृदय प्रफुल्लित हो उठता है उसी प्रकार मेरे इस सदोष प्रयत्न से भी भगवती सरस्वती प्रसन्न ही होंगी, अप्रसन्न नहीं।

रही सिद्ध-हस्त विज्ञ समालोचकों की बात। उनकी अप्रसन्नता से मैं भयभीत होने का नहीं और न तो मैं निराश ही हो सकता हूँ। जिस प्रकार शिक्षक अथवा ज्येष्ठ भ्राता के कुपित होने से शिष्य या कनिष्ठ भ्राता का भला ही होता है उसी प्रकार मेरे श्रद्धास्पद समालोचकों का कोप मेरे लिये सुखद होगा। क्रूर सत्य को अपने प्रेमियों से कहला लेने का एक कोप ही तो सरल साधन है। मैं तो ऐसी समालोचना का भिखारी हूँ। वही मुझे हितकारी हो सकेगी, अन्यथा मेरी पुस्तक की समालोचना से मुझे क्या लाभ? यदि विज्ञ समीक्षकों की सूक्ष्म दृष्टि में मेरा अनुवाद सोलहों आने ठीक उतरता है तब तो मेरे आनन्द की सीमा ही नहीं; यदि उसमें कोई कोर-कसर नज़र आती है तो मुझे सुधरने और बनने का मार्ग मिलता है जिसके लिये मैं उनका आभारी हूँ। अस्तु।

रुबाइयात उमर ख़य्याम

प्रस्तुत पुस्तक प्रसिद्ध कवि उमर की रुबाइयों का हिन्दी अनुवाद है। संसार की प्रायः प्रत्येक आदरणीय भाषा में, कम से कम योरुप की प्रायः प्रत्येक भाषा में, उमर के इस काव्य का अनुवाद मिल सकता है। केवल एक एक ही नहीं, दो दो और तीन तीन अनुवाद भी देखने में आते हैं। अंग्रेजी भाषा में तो इसके अनेक अनुवाद हुए हैं। हिन्दी में इसकी कमी कम से कम मुझे तो खटकती थी। हाँ, आज से कुछ वर्ष पूर्व, मुझे 'साकेत' के सुकवि द्वारा किया गया ख़य्याम की कुछ रुबाइयों का अनुवाद 'प्रभा' में देखने को मिला था किन्तु आज उसे कई वर्ष हो गये। उसके कुछ समय बाद से न तो प्रभा के ही दर्शन हुए न अन्य रुबाइयों के ही। प्रभा में केवल बारह, चौदह रुबाइयां प्रकाशित हो सकीं। मैंने सोचा, कवि-हृदय मैथिली शरण जी मिथिला और अयोध्या के प्रशांत रम्योद्यान में रमण-रत होकर फारस की मरुभूमि को भूल ही गये। सम्भवतः वे इस समय 'साकेत' की रचना में व्यग्र थे।

इसी समय मध्यप्रान्त में एक पत्रिका ने जन्म लिया। जिस समय उसका नाम-करण संस्कार हो रहा था मै वहीं उपस्थित था। उसके जन्म-दाता ने उसे 'प्रेमा' का मधुर नाम देकर मेरी ओर देखा। मैंने उसकी दीर्घायु के लिये ईश्वर से प्रार्थना की।

उक्त पत्रिका के सम्पादक, मेरे मित्र बाबू रामानुज लाल श्रीवास्तव एक दिन सुवर्ण-प्रभात में मेरे गृह द्वार पर पधारे। प्रेमा के सम्बंध में उनसे मेरी कुछ समय तक बात-चीत होती रही, अन्त में जब वे विदा होने लगे मुझ से बोले 'उमर ख़य्याम की पहली रुबाई मैंने प्रेमा के चित्रकार के पास भेजी है, उसका चित्र मैं प्रेमा के पहले अंक में दे रहा हूँ। कितना अच्छा होता यदि तुम उसका हिन्दी अनुवाद भी कर देते'।

मैं अपने मित्र का आग्रह न टाल सका। साथ ही मुझे वह दिन भी याद आ गया जब मैंने परमेश्वर से अपने प्रांत की एक मात्र मासिक-पत्रिका को चिरजीवी बनाने की प्रार्थना की थी। यहाँ उमर के हिन्दी अनुवाद के अभाव का भाव भी मेरे अंतर में हिलोरें लेने लगा। अस्तु, मैंने उन्हें बिना किसी सोच विचार के वचन दे दिया। वे भी प्रसन्न होकर घर लौट गये।

कार्य कठिन था। इसके पूर्व मैंने किसी पद्य या पुस्तक का अनुवाद नहीं

किया था। मुझे अधिक परिश्रम करना पड़ा और समय भी अधिक लगा पर अनुवाद मेरे मित्र को पसंद पड़ा। वे मुझे उत्साहित कर बोले "कुछ और रुबाइयों का अनुवाद कर डालो न"। मैंने यह भी स्वीकार कर लिया। चार छः और भी कर डालीं। प्रेमा के प्रथमांक में प्रकाशित भी हो गईं। मेरे पास कुछ पत्र पहुँचे —अनुवाद के लिए बधाई। मैं कुछ प्रसन्न हुआ, कुछ क्षुब्ध: क्या मैं कवि हूँ? क्या आज से मैं साहित्यिक हो गया? मेरे आनंद, मेरी आकांक्षा, मेरी लज्जा और मेरे क्षोभ की सीमा न रही। पर भला, मेरे मित्र कब मानने चले। प्रेमा का दूसरा अंक निकला और उसके साथ ही साथ मेरा अनुवाद भी। प्रोत्साहन तथा परामर्श ने एक पुस्तक का पूर्ण अनुवाद करा लिया। लगभग सात महीनों में अनुवाद समाप्त हो गया।

अनुवाद समाप्त हुये अभी तीन चार महीने ही हुए थे कि सहसा मेरे एक मित्रने मुझ से प्रश्न किया—कहिये, आपने गुप्त जी का अनुवाद देखा? मैंने उसी दिन एक प्रति मँगवाई। दो घंटे में पढ़ भी डाली। अनुवाद अच्छा था पर मेरा अनुवाद भी तो यहाँ समाप्त हो चुका था। फिर

'निज कवित्त केहि लाग न नीका'

गुप्त जी का अनुवाद पढ़ लेने के बाद भी मेरी यह इच्छा हुई कि मेरा अनुवाद भी हिन्दी-साहित्य-सँसार में पुस्तक रूप में पहुँच जाए।

इसी बीच में मेरे मित्र बाबू रामानुज लाल श्रीवास्तव कई अड़चनों में पड़ गये, स्वास्थ्य भी उनका खराब हो गया। फलस्वरूप कुछ काल के लिए पुस्तक का प्रकाशन रुक गया। यहाँ मुद्रक महोदय की व्यापार-चातुरी ने पुस्तक को कुछ महीनों के लिये रोक लिया। आज यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है; देखें, हिन्दी साहित्य-जगत में इसे स्थान मिलता है या नहीं। अन्त में इतना मैं अवश्य कहूँगा कि यदि सच्चे परिश्रम का फल मीठा होता है और धैर्य का अन्त सुखद है तो मुझे भी हताश न होना पड़ेगा।

पुस्तकाकार में प्रकाशित होने के पूर्व इसमें मैंने यहाँ वहाँ कुछ परिवर्तन कर दिए हैं। मैं समझता हूँ प्रेमा के सहृदय पाठक जिन्हों ने इस अनुवाद को पहले पढ़ा है इस प्रकार्य से प्रसन्न ही होंगे। पुस्तक छप चुकने के बाद भी एक दो स्थल ऐसे रह गए हैं जिनको मैं बदल देना चाहता हूं। ६७वीं रुबाई इस प्रकार छपी है—

मेरे म्लान शुष्क जीवन में द्राक्षारस का हो उत्सेक,
मरने पर मदिरा ही से हो मेरा मृत-स्नान अभिषेक,
पहिनाना प्रेयसि, इस शव को द्राक्षा-पल्लव का बाना,
मधु-वन ही के किसी कुंज में सोने देना मनमाना।

अब मैं उसे यों पढ़ना चाहता हूँ।

आना, इस जर्जर जीवन में द्राक्षारस बरसा जाना,
मरने पर मदिरा से मेरे मृत शरीर को नहलाना,
पहिनाना प्रेयसि, इस शव को द्राक्षा-पल्लव का बाना,
मधु-वन ही के किसी कुंज में सोने देना मनमाना।

रुबाई नम्बर ११ में मैंने अधिक स्वतंत्रता से काम ले लिया है। जिन सज्जनों को मेरी यह स्वच्छन्दता असह्य हो वे कृपया उसे इस प्रकार पढ़ें।

यहाँ, इसी तरु तले स्वल्प यदि पाता मैं आहार कहीं,
मिलती मधु की प्याली, होता काव्य-ग्रन्थ भी साथ यहीं।
बैठ पास में स्वर भर कर यदि कूजित करती तू कानन,
मेरे लिए प्रिये बन जाता यही विजन तब नंदन-वन।

रुबाई संख्या ६ अब इस प्रकार पढ़िये।

मौन हुआ दाऊद नहीं अब वह संगीत-सुधा बहती
पर गुलाब से बुलबुल स्वर्गिक अमर गिरा में गा कहती,
"मदिरा, मदिरा, मादक मदिरा, मदिरा, मदिरा मदिरा लाल"!
पाटल के हों लाल लाल पी जिसको पीले पीले गाल।

रुबाई संख्या ४२ की दूसरी पंक्ति में 'देव-दूत' के स्थान पर मैं 'सुर-बाला' कर देना चाहता हूँ। ऐसा कर देने से पद्य के कोमल भाव की अधिक रक्षा हो सकती है।

अक्षय तृतीया
१९८९
केशव-कुटीर
जबलपुर।

केशव प्रसाद पाठक

भूमिका

अभी कुछ ही दिनों की बात है कि मैं हिन्दी के एक प्रतिष्ठित विद्वान से बात चीत कर रहा था। उक्त सज्जन मुझ से बोले 'पाठक जी को उमर ख़य्याम की धुन कैसे सवार होगई? क्या हिन्दी और संस्कृत साहित्य भर में कोई दूसरा कवि नहीं मिला जो उन्हें फारस की धूल छानने की सूझी?' मैंने उस समय तो उन से कुछ नहीं कहा, पर बात मुझे खटक गई। प्रश्न उठा कि हिन्दी साहित्य को अन्य देश और भाषा के कवियों की आवश्यकता है अथवा नहीं। क्या हमारे लिये सूर और तुलसी पर्याप्त नहीं? उक्त सज्जन के मत से मैं तनिक भी सहमत नहीं। इस में संदेह नहीं कि हम उमर ख़य्याम को महाकवि कहकर हिन्दी जगत के सम्मुख रखते हैं, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि हम सूर और

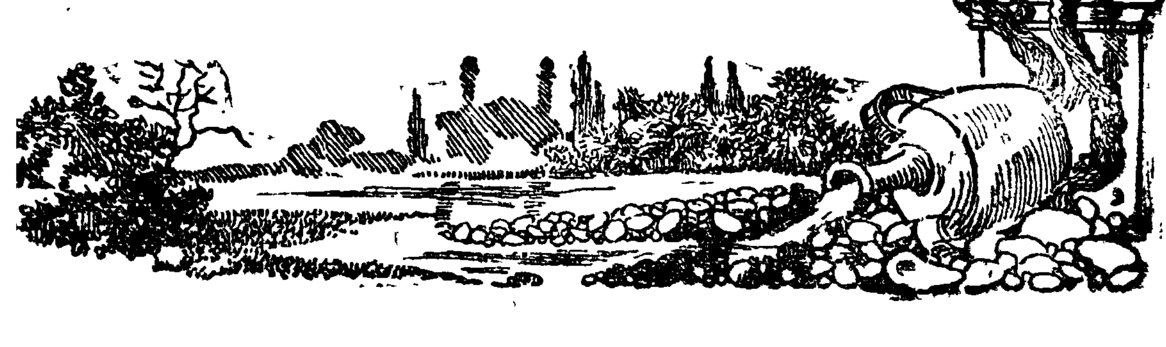

तुलसी का गौरव किसी प्रकार कम करना चाहते हैं। अन्य देश तथा भाषा के कवियों को अपने साहित्य में स्थान न देना हमारे हृदय की संकीर्णता का परिचय देता है और हमें संसार के सम्मुख हास्यास्पद बनाता है। उनका अध्ययन न करना, अथवा अपने देश के बालक बालिकाओं को उनके काव्य से अपरिचित रखना अपने देश और भाषा का अहित करना है।

संसार के भिन्न भिन्न देशों में, कालान्तर में, अनेक विद्वान कवि हो गये हैं जिनकी विचार धारा उस देश के काल तथा अवस्था के अनुसार भिन्न भिन्न दिशाओं में विविध प्रकार बही है। यदि कोई साहित्य संसार में स्थान पाने का इच्छुक है तो उसे सभी विचार-धाराओं से परिचित होना पड़ेगा। इतना ही नहीं, उसे उन धाराओं का अपने आप में समावेश कर उनसे आगे बढ़ने की चेष्टा करनी होगी। हमारे लिये पहले यह जानना आवश्यक होगा कि किसी भी विषय के संबंध में किस देश के विद्वानों ने क्या कहा है। फिर हमें यह देखने की आवश्यकता होगी कि हमारे भारत को उस विषय पर क्या कहना है और विश्व-साहित्य में उसका क्या स्थान होगा।

बुद्धि को तीव्र करने के लिये उसके परिमार्जन करने की आवश्यकता होती है। कूप मंडूक बने रहकर अपने को ही संसार का प्रखरतम विद्वान समझने से बुद्धि का द्वार ही बंद हो जाता है और बुद्धि-परिमार्जन की कोई राह ही नहीं रहती। विद्या-जनित चिन्तनशीलता का अभाव हो जाने से विद्या के विद्यमान होने में भी संदेह होना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

हिन्दी साहित्य संसार के अन्य साहित्यों से अनेकानेक दिशाओं में बहुत ही पीछे है, और यदि वह चाहता है कि अल्पकाल ही में वह दूसरों की बराबरी कर सके तो उसे अन्य देशों से बहुत कुछ उधार लेना पड़ेगा; कम से कम उसे दूसरों की महत्ता तथा उच्चता से परिचित अवश्य ही होना पड़ेगा। इसका सरल साधन अन्य भाषाओं के उत्तमोत्तम ग्रंथों का अपनी भाषा में अनुवाद ही है। ऐसे अनुवाद हमें अपने नवयुवकों के सामने रखने होंगे। तब हमें यह तो मालूम होगा कि सूर और तुलसी के सिवाय संसार में और कौन कौन से कवि तथा विद्वान हुए हैं और उन्हों ने संसार को किस दृष्टि-

कोण से देखा है, तथा उसमें क्या पाया है। हमारा साहित्य तो हमारे पास है ही; हम उस साहित्य को भी अपना बना लेना चाहते हैं जो हमारी प्रगति में सहायक हो सकेगा। हमारे मित्र पं० केशव प्रसाद पाठक जी का उमर ख़य्याम का अनुवाद ऐसे ही साहित्य-ग्रंथों में से एक है।

उमर ख़य्याम किसी प्रांत विशेष अथवा धर्म विशेष का कवि नहीं; वह विश्व का कवि है। उसकी कविता का रसास्वादन जिस प्रकार पश्चिम कर सकता है उसी प्रकार पूर्व भी, क्योंकि उसकी कविता की सृष्टि मानव हृदय के उस अंतरतम प्रदेश में हुई है जो मनुष्य मात्र को समान ही मिला है और जो जाति, धर्म अथवा देश की संकुचित सीमा में बद्ध नहीं। मनुष्य के अस्थि पंजर पर मांस का आच्छादन आजाने पर ज्योंही रक्त संचार हुआ और उसका हृदय स्पन्दन करने लगा त्योंही उसके दुर्बल और अबोध हृदय को कुछ प्रश्न विचलित करने लगे। मानव हृदय के इन्हीं चिरपरिचित चिरन्तन प्रश्नों में उमर की कविता ने जन्म पाया है। हम उमर को जीवन के उन मार्मिक प्रश्नोंकी छानबीन में निमग्न पाते हैं जो आदि काल से मनुष्य की बुद्धि को विचलित करते आये हैं और आज भी विचारवान मनुष्य के हृदय में, रह रह कर उठते और उसकी बुद्धि को कुण्ठित करते हैं।

इस जगती में क्यों आया मैं, नहीं पता इसका रहता,
और कहाँ से, नहीं ज्ञात कुछ, जल सम ही परवस बहता,
बाहर विवश चला जाता फिर मरु में चलता पवन यथा,
वह भी कहाँ, नहीं कह सकता, है रहस्यमय एक कथा।

यही कारण है कि उमर की कविता ने योरोप वालों को अपनी ओर आकर्षित किया और अनात्मवादी तथा भौतिक देश भी आज उस पर मुग्ध हैं। बात यह है कि उमर ज्यों ही संसार पर दृष्टि पात करता है त्योंही उसे मालूम होता है कि यह एक सराय है; फिर जब उसकी दृष्टि मनुष्य पर पड़ती है तब उसे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह पलभर का मेहमान है जो इस सराय में कुछ क्षण रह कर चला जाने वाला है। कहाँ जायेगा? क्यों जायेगा? कब जायेगा?

कहाँ से आया? क्यों आया? इत्यादि प्रश्न उसके मन में उठते हैं। वह उनका कोई ठीक उत्तर नहीं दे सकता। एक बात वह समझ जाता है कि मनुष्य क्षण-स्थायी है, मरणशील है। कितना ही अच्छा, कितना ही बुरा, उसका जीवन रहा हो, मृत्यु उसका अन्त कर देगी। यही एक बात उसे सत्य प्रतीत होती है और वह कह देता है।

केवल इतना ही निश्चित है. अन्य असत्य अलीक असार,
कुम्हला जाता कुसुम सदा को विकसित होने पर इकबार।

मनुष्य की क्षण-भंगुरता उमर के हृदय में सहानुभूति उत्पन्न कर देती है। वह उसकी सहायता करना चाहता है, पर उसके और भी निकट जाने पर वह देखता है कि मनुष्य पूर्ण रूप से पराधीन है। वह सोचने लग जाता है:—मानव जीवन अस्थिर है, क्षण-भंगुर है, मृत्यु ही उसका अटल अन्त है। विराट संसार इसी विनाश की ओर दौड़ा जा रहा है।

प्रलयकाल के इस विनाश में मिला तुझे पल भर केवल,
आह, शीघ्रता कर! अम्बर में अस्त हो चला तारक-दल,
महाशून्य के अरुणोदय की ओर चल पड़े यात्री जन,
जीवन-निर्झर का पल मे ही कर लेना है आस्वादन।

कुटिल काल अपनी वक्र तथा द्रुत गति से चला जा रहा है, निर्मम नियति अपना काम कर रही है। इन सब के बीच में खड़ा है बेचारा मनुष्य। वह निर्बल है, निस्सहाय है। अनेक ठोकरें खाने पर जब वह किसी ओर सहायतार्थ हाथ बढ़ाता है तब कोई उससे कह देता है, 'अच्छी मानवीय मति ही तुम्हारी सम्पत्ति है, वही तुम्हारी सहायक होगी।' अपनी शुचिता का कवच पहन कर, अपनी पटुता के अस्त्र शस्त्र लेकर भी जब वह नियति पर विजयी नहीं हो सकता तब अपनी अविरल अश्रुधार लेकर नियति से सदय होने का अनुरोध करता है पर वह एक क्रूर अट्टहास हँस कर मुख फेर लेती है।

मनुष्य की इस शोचनीय तथा नश्वर मूर्ति को देख कर कवि उन्मत्त हो उठता है।

> ' नक्श फरियादी है किसकी शोखिये तहरीर का
> कागज़ी है पैरहन हर पैकरे तसवीर का"
>
> ग़ालिब

अधीर और आकुल कवि-मस्तिष्क में प्रश्न उठता है—मनुष्य की इस परिस्थिति के लिये कौन उत्तरदायी है? असमर्थ मनुष्य के माथे दोष मढ़ना कहाँ तक ठीक होगा? क्या उस पर अनुचित दोषारोपण कर अन्याय नहीं किया जाता? इस अन्याय से कवि के कोमल अन्तस्तल में एक कठोर आघात लगता है। उसकी कठिन मुखाकृति, उसकी कुटिल भ्रू मनुष्य के निर्माता से केवल एक ही प्रश्न पूछना चाहती हैं।

तू ही जिसने करना चाहा मुझको मेरे पथ से भ्रष्ट,
गूढ़ गर्त औ जाल बिछा कर मुझको देना चाहा कष्ट,
नहीं फाँस लेगा मुझको क्या डाल नियति का तू बंधन,
मढ़ देगा क्या नहीं पाप के माथे मेरा अधः पतन ?

प्रश्न के साथ ही साथ वे निर्णय भी दे देती हैं—"दोषी"। इस दोष के लिये उसे मनुष्य से क्षमा याचना करनी होगी और स्वयं भी मनुष्य को क्षमा करना होगा।

तू ही जिसने दिया मनुज को कुत्सिततर मिट्टी का तन
और किया नन्दन निकुंज के सँग अनंग का आयोजन,
जिन पापों ने किया कलंकित मानव का आनन अनजान,
उनके लिये क्षमा ले उसकी और उसे कर क्षमा प्रदान।

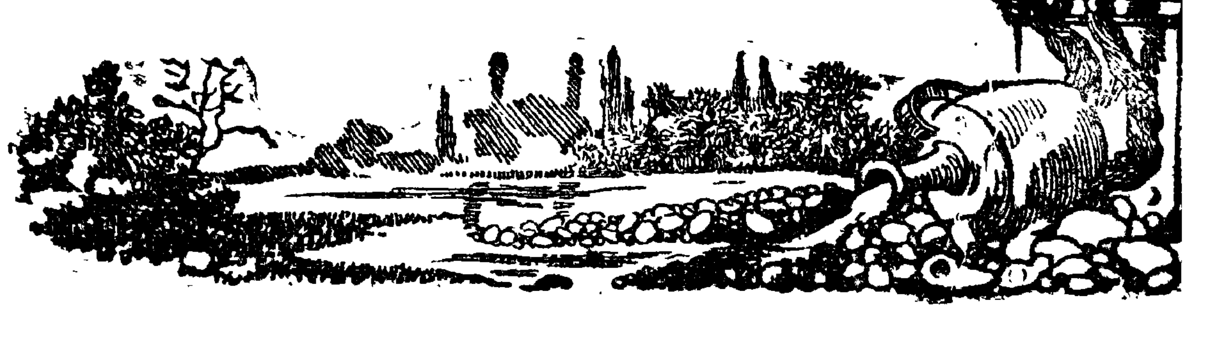

दोषी ठहराने के साथ ही उसके हृदय में एक भीषण ज्वाला धधक उठती है—प्रतिकार ! प्रतिशोध !! प्रतिघात !!! वह बदला लेगा । कवि के बदला लेने का ढंग भी अनोखा है–निराला है । वह मदिरा पान करेगा । आसव का सेवन कर वह इस नश्वर संसार को अपने मस्तिष्क के साम्राज्य से निर्वासित कर देगा । सुरा और सुन्दरी के संसर्ग में रह कर वह अपने छोटे से क्षणभंगुर कष्ट मय जीवन को भी, हँसकर सहर्ष धूल में मिल जाने वाले पुष्प के समान, बिताकर कहेगा:

झगड़ा करे झगड़ता है यदि आपस में सब विज्ञ समाज
मेरे लिये किन्तु होने दे बन्द द्वन्द्व जग का यह आज;
किसी दूरवर्ती कोने में कोलाहल के कर अधिवास,
हँसने दे मुझको भी उस पर करता जो तेरा उपहास ।

वह जीवन का यथा-सम्भव यथा-साध्य संभोग कर उपयोग करेगा और जब उसे अपने भाग्य का अंधकारपूर्ण तथा रहस्यमय चिट्ठा विचलित बनाएगा, जब जन्म-मरण की विकट समस्या उसके सम्मुख साकार खड़ी होगी और जब उसके नियन्ता की क्रूर अशिष्टता उसे विह्वल बनाएगी तब मदिरा पीकर वह आत्म-विस्मृति को आमंत्रित करेगा—

क्या, मेरी इच्छा बिन, मुझको दिया कहाँ से यहाँ ढकेल ?
और किधर, फिर मन से अपने, दिया यहाँ से मुझको ठेल ?
प्याले पर प्याला ढुलकाता, रहता हूँ मैं मद में चूर,
बेसुध हो सो जाये जिससे इस अशिष्टता की स्मृति क्रूर ।

हमें उमर के सम्बन्ध में एक बात और याद रखना होगी । वह केवल उन्हीं बातों को सत्य, विश्वसनीय और महत्व-पूर्ण मानता है जो उसके सम्मुख हैं । अन्य वस्तुओं के विषय में वह विश्वस्त रूप से कुछ नहीं कहना चाहता, और न उनके सम्बन्ध में वह व्यर्थ वाद-विवाद ही करना

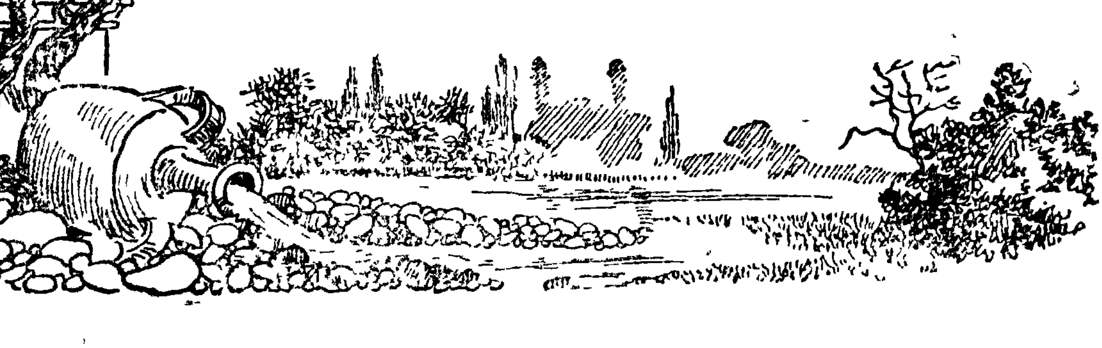

चाहता है। मनुष्य अपूर्ण है। उसकी बुद्धि की एक सीमा है। अनुमान और आधार उसे केवल सम्भावना तथा असम्भावना के प्रदेश तक पहुँचा सकते हैं। कौन कह सकता है सुखमय स्वर्ग की सृष्टि कवि की केवल कोमल कल्पना ही में नहीं हुई; अथवा यातनामय नर्क धर्म-गुरुओं एवं पण्डितों के प्रतारणामय वाक्यों में ही नहीं बना है, और पुनर्जन्म का जन्म दार्शनिकों एवं नैयायिकों की नीरस मीमांसा में नहीं हुआ।

तब क्या उनकी चिन्ता करना ठीक होगा? केवल इतना ही नहीं, कवि हमें भूत की विगत बातों तथा भविष्य की भावी भावनाओं पर भी विचार करने से रोकना चाहता है। उसके साम्हने तो वर्तमान ही विद्यमान है।

कुछ विचारते—मधुमय कितना यह ऐहिक ऐश्वर्य अपार ;
कुछ कहते—मंगलमय कितना आने वाला स्वर्ग उदार ;
जो सम्मुख है लो सम्हाल वह, शेष सभी दो जाने भी,
अरे! दूर के ढोल सर्वदा लगते हैं सुहावने ही।

और

आशंका अनुशोक आदि हर करती है जो आज विशद
मेरी इस मधु की प्याली में मधु-बाले आ भरदे मद ,
'कल'—कैसा कल? क्यों कर कल को, तू ही कह, मैं अपनाऊँ,
सम्भव है, कल तक गत कल की शताब्दियों में मिल जाऊँ।

इसी 'आज' को वह सफल बना लेना चाहता है। वह सुरा और सुन्दरी को सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने का सरल साधन और सामग्री समझता है, और इसीलिए वह उन्हें अपना आराध्य बना लेता है। इसके बाद तो वह कहता है।

अभी धूल में मिल जावेंगे दोनों यहीं प्रिये हम लोग ,
करले उसके पूर्व मिला जो उसका ही समुचित उपयोग ,
हैं हम धूल, धूल में जाना, धूल तले सोना, हा हन्त !
होगा वहाँ न गीत, न गायक और न मद्य, न कोई अन्त।

और यहीं कवि की विचार-धारा रुक जाती है ।

दो शब्द अनुवादक और अनुवाद के सम्बन्ध में भी ।

श्रीयुत केशव प्रसाद पाठक भार्गव ब्राह्मण हैं । आपके पिता विद्याभूषण श्री लक्ष्मी प्रसाद पाठक अच्छे पण्डित तथा ज्योतिष के अद्वितीय विद्वान हैं । आपका विक्रम-विजय-पञ्चाग मध्य-प्रान्त के लिए गौरव की बात है । "श्याम-सुधा" महाकाव्य के प्रणेता साहित्य-शास्त्री पं० श्यामाकान्त पाठक अनुवादक के ज्येष्ट भ्राता हैं । पण्डित केशवप्रसादजी पाठक ने अंग्रेजी और हिन्दी साहित्य का अच्छा अध्ययन किया है; संस्कृत तथा उर्दू कविता से भी आपको अनुराग है। आप बड़े हँस-मुख, मिलनसार और सत्य-प्रिय व्यक्ति हैं। उपर्युक्त गुणों के साथ एक दो दोष भी आप में मिलते हैं। आपका प्रत्येक कार्य अनियमित तथा अव्यवस्थित हुआ करता है। इसका कारण आपकी निर्द्वन्द्वता तथा आनन्द-प्रियता ही है । आप किसी प्रकार का कोई प्रतिबँध अपने ऊपर नहीं चाहते । आपका नित्य का जीवन संगीत, कविता और मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद में ही बीतता है। पर आपकी दिन-चर्य्या जितनी अव्यवस्थित है आपकी कविता उतनी ही परिमार्जित होती है । इस अनुवाद को परिष्कृत तथा सुपाठ्य बनाने में आपने जिस धैर्य, अध्यवसाय तथा दृढ़ता से काम लिया है वह प्रशंसा के योग्य है । किसी भी अनुवादक को प्रायः दो कठिनाइयों का साम्हना करना पड़ता है। यदि वह अनुवाद को अक्षरशः करने का प्रयत्न करता है तो उसके अनुवाद में कृत्रिमता आ जाती है और वह बहुधा मूल का केवल शब्दार्थ ही बन जाता है। मूल कविता का भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं होने पाता । और यदि वह मूल के भाव को लाने का प्रयत्न करता है तो लोग उसे छायानुवाद कहकर उसके शाब्दिक अनुवाद

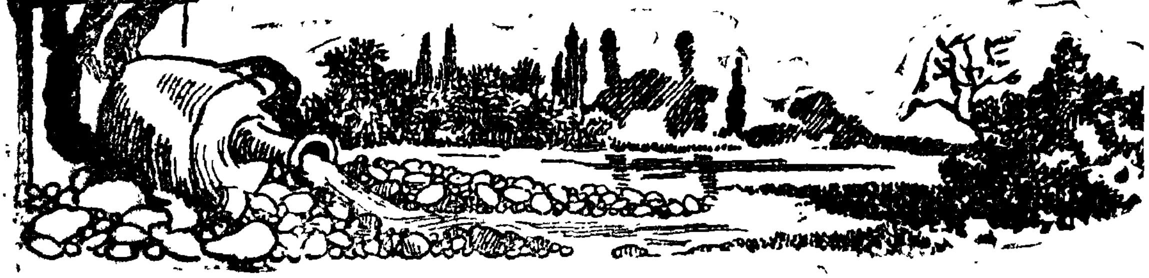

न होने पर उससे असंतोष प्रगट करते हैं। वास्तव में ऐसे अनुवादों में मूल ग्रन्थों का गौरव भी नष्ट हो जाता है। हमें यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि पाठक जी ने इन दोनों कठिनाइयों पर विजय पायी है। आप के अनुवाद में मूल का शाब्दिक रूपान्तर तो है ही; साथ ही साथ आपने मूल भाव की यथोचित रक्षा की है। फिट्ज़रेल्ड के अनुवाद का प्रधान गुण यह है कि वह अनुवाद होने पर भी स्वतंत्र रचना सा प्रतीत होता है। मेरी समझ में इस अनुवाद में भी यही गुण समुचित मात्रा में विद्यमान है। मूल अनुवाद कर्त्ता के सामने जो दिक्क़तें पेश थीं वे तो आपके सम्मुख थीं ही; उनके साथ ही साथ दो और भी असुविधाएँ आपके कार्य को कठिन बना रहीं थीं। एक तो आपने अनुवाद में उस स्वतंत्रा से काम नहीं लिया जिस से कि फिट्ज़रेल्ड ने; फिर जिस भाषा में आपको अनुवाद करना पड़ा वह अभी उतनी मजी हुई नहीं जितनी कि अंग्रेजी भाषा। समयके साथ ही हिन्दी भाषा में भी वे गुण आजायँगे; किन्तु अभी उस में वह लचीलापन, वह प्रवाह, और शब्दों की वह व्यापकता नहीं। तिस पर भी अनुवाद में पाठक जी को आशातीत सफलता मिली है। आपके अनुवाद में प्रसाद, माधुर्य और ओज तीनों गुणों का समुचित समावेश है। अनुवाद की भाषा सरल है और ज़ोरदार भी, मधुर है और साथ ही उपयुक्त भी। मूल अनुवाद में जो भाव जिन शब्दों में व्यक्त हुआ है, उन्हीं शब्दों में वह भाव प्रस्तुत अनुवाद में भी परिस्फुटित हुआ है। दो चार स्थलों पर जहाँ अनुवाद शाब्दिक नहीं हुआ है वहाँ भी पाठक जी ने अपने शब्दों द्वारा मूल के भाव को ही परिपुष्ट किया है। अपनी स्वतन्त्रता पर भी आपने बन्धन ही रखा है। उदाहरण के लिए देखिए रुबाई संख्या १८, १९, ३०, ३७, ४९, ५१,

इनके अतिरिक्त देश तथा धर्म के नियम और प्रथा के अनुसार आपने एक दो स्थल बदल दिए हैं जैसे रु० १८, ७२ इत्यादि॥

अन्त में मैं पाठक जी से एक बात कह देना चाहता हूं। जिस प्रकार आपने आवश्यकतानुसार अपने अनुवाद मे यहाँ वहाँ परिवर्तन किया है उसी प्रकार यदि वे व्यक्तिवाचक नामों के स्थान में भारतीय नामों का उपयोग करते तो सम्भव था उसमें और भी सरलता आजाती। पाठक गण, विदेशियों के

नाम से भली भाँति परिचित न होने के कारण, असुविधा मे पड़ जाते हैं और वे तत्कालीन कविता-जनित आनन्द का अनुभव उस मात्रा में नहीं कर सकते जितना कि उनसे भली भाँति परिचित व्यक्ति। म॰ कवि फ़ैज़ी ने अपने 'नल-दमन' में इसी स्वतन्त्रता से काम लिया है। मेरी समझ मे वह अनुवाद आदरणीय और अनुकरणीय है। पाठक जी का अनुवाद भी आदर्श हुआ है।

बृज-वाटिका,
जबलपुर।
तारीख २३-५-३२.

बृजविलास शुक्ल

उमरख़य्याम की जीवनी

कवि के और किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में यह अंतर रहता है कि कवि के जीवन में उसकी आंतरिक भावनाओं का जितना प्राधान्य रहता है उतना उसकी बाह्य कृतियों का नहीं। एक राजनीतिज्ञ के बारे में हम यह जानना चाहते हैं कि उसने क्या किया, एक दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक के बारे में हम यह पूछते हैं कि उसने क्या सोचा; एक कवि के विषय में हम यह जानने के लिए इच्छुक रहते हैं कि उसने क्या अनुभव किया। यह अनुभूति ही कवि की अपनी सम्पत्ति है; यही जब साकार रूप धारण करती है तब कला की सृष्टि होती है; जैसा कि सौन्दर्य-शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य बेनेडिटो क्रोजी कहते हैं, अनुभूति का ही नाम कला है। इसलिये यदि हम किसी कवि की आत्मा से परिचित होना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि हम उसकी कविता का अध्ययन करें क्योंकि वही उसके अंतर का सच्चा प्रतिबिंब रहती है; वही इसलिये उसकी सबसे अच्छी जीवनी है। नार्वे के एक आधुनिक कवि व नाटककार इब्सेन एक स्थान पर लिखते हैं। "All that I have written corresponds to something that I have lived through, if not actually experienced. Every new poem has served as a spiritual process of examination and purification" (जो कुछ मैंने लिखा है वह मैं यदि स्वयं अनुभव नहीं कर चुका हूं तो कम से कम मैं उस विचार-धारा के भीतर से जा चुका हूं। मेरी प्रत्येक नई कविता या तो मेरे मन को अधिक स्वतंत्र करने में या मेरी आत्मा को अधिक निर्मल बनाने में सहायक हुई है।) कवि की एक कविता पढ़कर उसकी अन्तरात्मा से हमारा जितना घनिष्ट परिचय हो जाता है उतना, सम्भव है उसके जीवनकी सब घटनाएं जान कर भी न हो। इसका कारण यह है कि कवि की विशेषता इसमें नहीं है कि वह बाह्य संसार में कोई बड़ी भारी क्रांति उत्पन्न कर दे, किसी देश के सामाजिक अथवा राजनैतिक जीवन में उथल-पुथल मचा दे; जिस वस्तु के लिये हम कवि के पास जाते हैं वह यह

नहीं है और न इस बात से उसकी कविता का मूल्य ही जाँचा जा सकता है। कवि का विशेष गुण है उसके भावों की कोमलता, उसकी कल्पना की सुकुमारता और अपने हृद्‌गत भावों को ललित और मधुर भाषा में व्यक्त करने की शक्ति। और इनका संबंध कवि के अन्तर्जगत से है जिसके स्वतंत्र और निर्मल वायु-मंडल में उस की प्रतिभा स्वच्छंद विहार करती है। इस कल्पना के संसार में उसके जीवन की अपूर्ण इच्छाएं पूर्ण होती है। उसके विफल स्वप्न सफल हो जाते हैं। उसकी सुकुमार आशाएं जो संसार के प्रखर आतप में झुलस जाती हैं यहां फिर से लहलहा उठती हैं।

कविवर ब्राउनिंग Browning अपनी प्रसिद्ध कविता रब्बि बेन इज़रा Rabbi Ben Izra में लिखते हैं

Thoughts hardly to be packed
Into a narrow act,
Fancies that broke through and escaped;
All I could never be,
All men ignored in me,
This I was worth to God, whose wheel
the pitcher shaped.

कवि हृदय की ये अनन्त-चुम्बी कल्पनाएं ही जो कार्य की संकीर्ण और संकुचित सीमा में व्यक्त नहीं हो पातीं उसकी अक्षय तथा अमूल्य निधि हैं।

किंतु कवि केवल भावों और कल्पनाओं का एक पुतला नहीं है, वह हम सब के समान ही रक्त-मांस का बना मनुष्य है और मनुष्य का स्वभाव है कि वह जिसकी उपासना करता है उससे मानवीय संबंध स्थापित करना चाहता है। कवि की कविता पढ़कर हमें उसके अधिक समीप जाने की इच्छा होती है। हम यह जानना चाहते हैं कि वह देखने में कैसा था; कैसे वह कपड़े पहनता था, कैसी उसकी बात-चीत होती थी; कौन उसके मित्र थे; किन प्रभावों के बीच में उसका जीवन बीता और किन कारणों से उसकी विचार धारा किसी विशेष दिशा में बही इत्यादि।

यह हमारे लिये बड़े दुःख की बात है कि वाल्मीकि, होमर, और शेक्सपियर जैसे जगत के प्रथम श्रेणी के महाकवियों का जीवन-संबंधी ज्ञान बहुत कुछ हमारे अनुमान पर ही अवलम्बित है। उमर ख़य्याम की भी भाव-पूर्ण तथा ओजमयी कविता पढ़ कर हमें उसकी जीवन-संबंधी घटनाएँ जानने का जो तीव्र कुतूहल होता है उसे तृप्त करने के लिये हमारे पास पर्याप्त साधन नहीं है। उसके विषय में भी हमारा जो ज्ञान है वह अत्यंत अल्प है।

उमर ख़य्याम के जीवन के विषय में हमें जो ज्ञान प्राप्त है, वह अत्यन्त अल्प है। उसकी जीवन-गाथा का पता हमें निम्न लिखित ग्रन्थों से चलता है।

निज़ामुलमुल्क की "वसीयत"
तारीख़–उल–हुकामा (हि. सं. ६४७)
प्रसिद्ध इतिहासकार अबुलफ़िदा के ग्रन्थ
मुहम्मद शहरज़ूरी का "नज़हतुल-अरवाह"
समरकंद निज़ामी का "तारीख़-उल-कुदामा"

इसके सिवा फ़ारसी के अन्य ग्रन्थों में भी यहाँ वहाँ उसका उल्लेख मिलता है। इन सब से ज्ञात होता है कि उमर ईरान के उत्तर-पूर्व कोण में स्थित ख़ुरासान प्रान्त का निवासी था जोकि उस समय फ़ारसी संस्कृति का केन्द्र था। नैशापुर जहां उसका जन्म हुआ सदा से अपनी जल-वायु की उत्तमता और उद्यानों की सुन्दरता के लिए विख्यात था। कदाचित् इन्हीं उद्यानों ने उमर ख़य्याम के मन में वह प्रकृति-प्रेम उत्पन्न किया जो उसकी कविता में हमें कई जगह मिलता है। उसका जन्म कब हुआ और उसके पिता क्या करते थे—यह हमें ठीक ठीक नहीं मालूम। अल्प अर्सलन और मलिक शाह, इन सेलजुक राजाओं के प्रधान मंत्री निज़ामुलमुल्क अब्दुल क़ासिम अपनी "वसीयत" में लिखते हैं कि छुटपन में वे, उमर ख़य्याम और हसन बेनसब्बाह, जो बाद में एक ख़ूनी के नाम से मशहूर हुआ, नैशापुर के प्रसिद्ध विद्वान इमाम मुआफ़िक़ के यहाँ साथ साथ पढ़ते थे।

इस से ज्ञात होता है कि उसके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी रही होगी। निज़ामुलमुल्क के संस्मरणों में से एक विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि एकतो वह उमर ख़य्याम की शांति-प्रिय मनोवृत्ति पर अच्छा प्रकाश डालता है, दूसरे ईरान की उस समय की षड्यन्त्रपूर्ण स्थितिका वह अच्छा वर्णन करता है। हम नहीं कह सकते वह कहाँ तक सत्य है। कई आधुनिक विद्वानों की राय में वह कपोल कल्पना मात्र है पर हम उसकी रोचकता के कारण उसे यहाँ उद्धृत करते हैं।

इमाम मुआफ़क के यहाँ साथ साथ अध्ययन करते हुए एक दिन हसन ने अपने दोनों मित्रों से प्रस्ताव किया कि हम सब लोग यह प्रतिज्ञा करें कि हम में से जिस किसी को भी भविष्य में सबसे अधिक शक्ति, सम्मान या सम्पत्ति प्राप्त हो वह उसे अपने अन्य दो मित्रों के साथ आपस में बाँट ले। यह बात पक्की रही। तीनों मित्रों ने प्रतिज्ञा कर ली। इसके बाद कई साल बीत गए। समय आने पर निज़ामुलमुल्क की असाधारण योग्यता ने उसे अल्प असंलन के प्रधानमंत्री के पद पर पहुँचा दिया। हसन अभी अपने मित्रकी प्रतिज्ञा नहीं भूला था। उसकी सम्पत्ति और पद में से अपना भाग लेने के लिए वह मंत्री के पास पहुँचा। वज़ीर उदार थे और अपनी प्रतिज्ञा भूले न थे। हसन की इच्छानुसार उन्होंने उसे राज्यशासन में एक उच्च पद दिला दिया। किन्तु महत्वाकांक्षी हसन इतने से संतुष्ट न हुआ, और स्वयं मंत्री का पद पाने की लालसा से अपने मित्र के ही विरुद्ध षड्यंत्र रचना आरंभ कर दिया। इसमें वह कृतकार्य नहीं हुआ और उसे राज्य छोड़ कर भाग जाना पड़ा। किन्तु वह कई अनुयायियों को इकट्ठा कर एक ख़ूनी गिरोह का सर्दार बन गया और उसने समस्त मुस्लिम संसार को एक भीषण आतङ्क में डाल दिया। उसका बाल्यकाल का सच्चा मित्र निज़ामुलमुल्क अंत में उसी की रक्त-पिपासा का शिकार हुआ।

उमर ख़य्याम भी वज़ीर के पास अपना हिस्सा मांगने आया किंतु उसने कोई उच्च पद पाने की अभिलाषा प्रकट नहीं की। उसने कहा, मैं सिर्फ़ यही चाहता हूँ कि तुम मुझे अपनी छत्र-छाया के नीचे एक कोने में पड़ा रहने दो जिससे मैं संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाता रहूँ और तुम्हारी ज़िन्दगी के

लिए ख़ुदा से दुआएं माँगता रहूँ। पहले तो वज़ीर को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ; किन्तु जब उसने देखा कि उमर ख़य्याम की सचमुच यही आन्तरिक इच्छा है तो उसने उसे ख़जाने से प्रतिवर्ष १२०० स्वर्ण मुद्रा मिलने का प्रबंध कर दिया, और उमर ने अपना शेष जीवन वहीं ज्ञान-संचय और विद्या के उपार्जन में व्यतीत कर दिया।

यदि यह कथा सच हो, और यदि उमर ख़य्याम निज़ामुलमुल्क का समवयस्क रहा हो, तो उसका जन्म हि. सं. ४०८ (ईस्वी सन् १०१४) के लगभग होना चाहिए। किन्तु उमर ख़य्याम की मृत्यु हि. सं. ५१७ (ईसवी सन् ११२३) में हुई, और यदि उसका जन्म हि. सं. ४०८ में हुआ हो तो कहना चाहिये वह १०९ साल तक जीवित रहा। इतनी दीर्घायु का होना कोई असम्भव बात नहीं है— उदाहरणार्थ, शेखसादी १०६ वर्ष तक जीवित रहे थे—किन्तु यदि ऐसा हो तो यह मानना पड़ेगा कि एक नहीं दो दो व्यक्ति, उमर और हसन, इतने दीर्घकाल तक जीवित रहे, और यह तनिक कम विश्वसनीय प्रतीत होता है।

हि. सं. ४०८ में नहीं, तो उसके कुछ ही वर्ष उपरांत उमर ख़य्याम का जन्म हुआ होगा क्यों कि इब्न-उल-अथीर की प्रमाणोक्ति से यह प्रगट होता होता है कि हि. सं. ४६७ (ई. स. १०७३) में ईरानी पंचाग में संशोधन करने के लिये जो आठ ज्योतिष-शास्त्र वेत्ता नियुक्त हुए थे उनमें से उमर ख़य्याम भी एक था। अबुलफ़ैदा भी लिखते हैं कि निज़ामुलमुल्क ने उमर ख़य्याम को शाही वेधशाला (Royal Observatory) के प्रधान ज्योतिषी का पद दे रखा था। उस समय उमर अवश्य अपनी प्रौढ़ावस्था प्राप्त कर चुका होगा। उमर ख़य्याम ने सौर-वर्ष की अवधि अधिक शुद्धता से निश्चित करके चांद्र-वर्ष और सौर-वर्ष दोनों का संमिश्रण करने की पहले से अधिक समाधान-कारक योजना की। यह संशोधित पंचाग तारीख़-ए-जलाली के नाम से मशहूर है और कुछ विद्वानों के मत में ग्रेगोरियन पंचाग से भी श्रेष्ठ है।

इसके सिवा उमर ख़य्याम ने बीज गणित पर एक पुस्तक लिखी जिसका अनुवाद पेरिस से फ्रेंच भाषा में बान के वीपके (M. Woepcke of Bonn) महोदय द्वारा १८५१ में प्रकाशित हो चुका है। इससे हमें

यह मालूम पड़ता है कि उमर ख़य्याम का पूरा नाम "ग़ियासुद्दीन अबुल फ़तह उमर बिन इब्राहीम अलख़य्यामी" था। ख़य्याम उमर का तख़ल्लुस था। इसका अर्थ होता है खीमे बनाने वाला। इससे अनुमान होता है कि उमर या उसके पूर्वज किसी समय खीमे बनाने का काम करते रहे होंगे। अपने व्यवसाय पर से उपनाम रखने की प्रथा फारसी साहित्य में नवीन नहीं है। अत्तार, अस्सार इत्यादि नाम इस बात की पुष्टि करते है। अंग्रेज़ों में भी मिलर, फ्लेचर इत्यादि नामों की उत्पत्ति ऐसे ही हुई है।

उमर ख़य्याम ने भूमिति और जीव-शास्त्र पर भी किताबें लिखी हैं। उसके लिखे हुए ग्रंथों में प्रकृति-विज्ञान संबन्धी एक पुस्तक और "अलवजूद" और "अलकौन वाल तकलीफ" नाम की दो पुस्तिकाएं भी हैं। फारसी रुबाइयों के सिवा उसकी अरबी भाषा में की हुई कविता भी थोड़ी थोड़ी मिलती है। किन्तु अपने समय में उमर अपनी कविता के लिये प्रसिद्ध नहीं था। फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि तथा चित्रकार अफ्फ़ी अपने ग्रथ में उसका उल्लेख तक नहीं करता। यद्यपि दौलतशाह ने भी अपनी पुस्तक में उसका नाम-निर्देश किया है तथापि उसे एक अलग प्रकरण नहीं दिया है। अभी भी ईरान में उमर ख़य्याम को कोई प्रथम श्रेणी का कवि नहीं मानता। कोई उसे फिरदौसी, अनवरी, रूमी और हाफ़िज़ की श्रेणी में स्थान देने को तैयार नहीं। उमर ख़य्याम ने अपने काल में जो ख्याति प्राप्त की वह अपने वैज्ञानिक ज्ञान और अपनी दार्शनिक विद्वता के कारण। तारीख़ उल हुक्कामा में लिखा है "उमर ख़य्याम अपने समय का सबसे प्रकांड पंडित समझा जाता था। संसार में उस समय कोई ऐसी विद्या न थी जिसमें वह पारंगत न हो"। इससे मालूम होता है कि उमर ख़य्याम ने अपनी कविता में चाहे जितना आमोद-प्रमोद, सुरा-सुन्दरी-उपभोग और स्वच्छंद विहार का उपदेश दिया हो किन्तु अपने खुद के जीवन में वह सांसारिक विलासों में तल्लीन न होकर विद्या-व्यासंग में ही अधिक काल बिताता था। इतना ही नहीं, इस्लाम और कुरान में अविश्वास होते हुए भी कुरान और अन्य धर्म-ग्रंथों का उसका जितना अच्छा अध्ययन था उतना उसके समय में किसी का नहीं था। शहर ज़ूरी एक प्रसंग का वर्णन करते हुए कहते हैं, "एक दिन अलख़य्यामी कुरान

पाठियों के गुरू वज़ीर अब्दुल रज़ाक से मिलने गया। उस समय अबुलहसन अलगज़्ज़ाली भी वहां मौजूद थे। वज़ीर में और उनमें कुरान की किसी आयत के शुद्ध पाठ के ऊपर बहस हो रही थी। ज्योंही उमर ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया त्योंही वज़ीर बोल उठे "आइये, अच्छा हुआ आप आ गये। कुरान के संबंध में आप का वाक्य तो प्रमाण है।" प्रस्तुत प्रश्न उमर ख़य्याम के सामने रखा गया। उमर ने आयत के जितने पाठ थे वे सब बताये, हर एक की पुष्टि में दिये हुए प्रमाण सामने रख कर प्रत्येक के पक्ष और विपक्ष में दिये गये तर्कों की आलोचना की और अन्त में अपना खुद का मत व्यक्त किया। अलगज़्ज़ाली उसकी यह विद्वत्ता देख कर दंग रह गये और बोलेः— ईश्वर करे संसार में ऐसे विद्वान सदैव उत्पन्न होते रहें। सचमुच, मैं नहीं जानता था कि कुरान के पाठकों में से किसी को भी कुरान इतनी अच्छी तरह मालूम होगी।"

उमर ख़य्याम की स्मरण-शक्ति बड़ी तीव्र थी। कहते हैं जब वह इस्पहान में था तब एक बार उसने एक पुस्तक सात बार पढ़ी और वह उसे कंठाग्र हो गई। जब वह नैशापुर लौटा तो उसने उसे अपनी स्मरण-शक्ति से प्रायः ज्यों का त्यों लिखवा दिया।

शहरज़ूरी और क़िफ़्ती लिखते हैं कि सेलजुक बादशाह मलिकशाह उमर ख़य्याम को अपना अन्तरंग मित्र मानता था। शमसुलमुल्क भी उसका बड़ा सम्मान करता था और उसे तख़्त पर अपने पास ही बिठाता था। किन्तु उमरख़य्याम कभी लोक-प्रिय नहीं हुआ। उसके स्वतंत्र और निर्भीक विचारों ने उसे ईरान में बड़ा अप्रिय बना दिया था। धर्मांध मुल्लाओं की तीव्र आलोचना करने के कारण और परंपरागत धार्मिक विचारों की हंसी उड़ाने के कारण उसके विरुद्ध लोगों में कोप की इतनी तेज़ ज्वाला प्रज्वलित हो उठी थी कि उसे अपनी जान बचाना कठिन हो गया था। कहते हैं अन्त में तो उसे लोगों के समाधान के लिये मक्के की यात्रा करनी पड़ी और जीवन के उत्तर काल में धार्मिक रूढियों और नियमों का पालन करना पड़ा। उमर ख़य्याम के प्रेमियों को, जो उसे प्रामीथियस (Prometheus) के समान अपने सिद्धांतों के शहीद और एक उदात्त विद्रोही के रूप में कल्पना करते हैं यह सुनकर

अवश्य निराश होंगे। यदि उमर ख़य्याम ने अपनी संशय-वादिता का अन्त तक निर्वाह किया होता और अपने विरोधियों को सदैव व्यंग्य-मिश्रित उपेक्षा की दृष्टि से ही देखा होता तो उन्हें उसके प्रति अधिक श्रद्धा होती। जीवन के संध्याकाल में ऐसा करके मानो उमर ख़य्याम ने अपनी दुर्बलता का परिचय दिया है।

उमरख़य्याम की दैनिक जीवनचर्या के संबंध में कुछ लेखकों का कहना है कि वह अक्सर चांदनी रात में अपने घर के सामने एक चबूतरे पर नाचने गाने वालों को इकट्ठा कर उनसे गपशप करने में अपना समय बिताया करता था। शराब की प्याली पर प्याली ढाली जाती थी। सर्वत्र आनंद का साम्राज्य रहता था। ऐसी सभा में ईश्वर के लिये कोई स्थान नहीं रह सकता और न था। कहते हैं एक दिन जब वह इसी तरह आनंद मना रहा था अचानक हवा का एक झोंका आया जिससे उस स्थान पर रखी हुई सब मोमबत्तियां बुझ गईं और शराब का घड़ा जो चबूतरे की बाट पर रखा हुआ था लुढ़क कर फूट गया और उसकी सारी शराब ज़मीन पर गिर गई। उमर ख़य्याम दैव की इस क्रूरता पर बड़ा नाराज़ हुआ और उसी वक्त बैठे बैठे २ उसने ईश्वर के नाम यह विद्रोहपूर्ण रुबाई बना डालीः—

"अय मेरे खुदा, तूने शराब का घड़ा फोड़ कर मेरे आनन्द का द्वार ही बन्द कर दिया है। शराब मैं पीता हूँ इसमें संदेह नहीं, किन्तु शराबियों की सी हरकत तो तेरी होती है। (कहने में मेरा मुंह धूल से भर जाय) क्या ऐसा हो सकता है कि शराब के नशे में तेरे होश ठिकाने नहीं है?"

इतना कह कर ज्यों ही कवि ने आइने की ओर निगाह डाली तो देखा कि उसका चेहरा कोयले के समान काला होगया है। यह मानो ईश्वर की ओर से उसे दंड था। तब उसने एक और रुबाई लिखी जिसमें उसने कुरान में लिखे हुए मृत्यु के उपरांत दंड और पुरस्कार मिलने के विधान के प्रति तिरस्कार प्रकट किया। उस रुबाई का तात्पर्य यह हैः—

"क्या तू संसार में ऐसा एक भी मनुष्य बता सकता है जो सर्वथा पाप-रहित हो? और क्या तू यह कह सकता है कि पाप से वह यदि चाहे भी तो

कैसे अछूता रह सकता है? अगर मैं कोई ग़लती करूँ और उसके लिये तू मुझे ग़लत सज़ा दे तो तू ही बता मुझ में और तुझ में फ़र्क़ ही क्या रह गया?"

यह कथा कहाँ तक सच है यह हम नहीं कह सकते। किन्तु उसकी कविता से उसके चरित्र के बारे में हमारी जो धारणा होती है उससे इस कथा की पुष्टि होती है। सृष्टि-कर्ता के प्रति जो विद्रोह-भाव उसकी रचनाओं में विद्यमान है वही उसके जीवन में भी प्रतिविम्बित दिख पड़ता है।

किन्तु उसकी मृत्यु के विषय में जो किंवदन्ती प्रचलित है उससे एक दूसरी ही भावना होती है। यहां उमर एक कट्टर विद्रोही नहीं, एक अनुतापी आत्मा के रूप में हमारे सामने आता है। मुहम्मद शहरज़ूरी अपने "नज़हतुल-अर्वाह" में लिखते हैं:—"एक दिन उमरखय्याम एक स्वर्णशलाका से अपने दांत खोदते हुए अरब के प्रसिद्ध हकीम व दार्शनिक आविसेना की आरोग्य-विषयक पुस्तक का अध्यात्मविद्या-सम्बन्धी प्रकरण पढ़ रहा था। जब वह उस स्थल पर पहुँचा जहाँ "एक और अनेक" की मीमांसा की गई है तो उसका उस पर इतना असर हुआ कि उसने उसी वक्त किताब बंद कर दी और वहां से उठकर चला गया। उस दिन उसने न कुछ खाया न पिया। लोगों को उसने अपना अन्तिम आदेश दिया, और जब शाम को वह नमाज़ पढ़ने को बैठा तो ज़मीन पर सिज़दा करते हुए उसने कहा, "अय खुदा, अपने जीवन में मैंने तुझे शक्ति भर जानने की चेष्टा की है; यदि मैं तुझे नहीं पहचान सका हूं तो तुझे समझने का मैंने जो आजीवन प्रयत्न किया है केवल उसी का तू ख़याल कर मुझे माफ़ करना।" बस, इतना कहकर उसने प्राण छोड़ दिये।

उपर्युक्त वृत्तान्त से मालूम पड़ता है कि जीवन के अन्तिम दिनों में शायद उमरख़य्याम के मन में कुछ परिवर्तन हो चला था। उसके विद्रोही भावों में कुछ शिथिलता आगई थी। अभी तक जिस संशय पर उसने अपने सारे जीवन की भित्ति खड़ी की थी उस संशय पर भी अब उसे संशय होने लगा था। शायद ईश्वर इतना दोषी न हो जितना कि उसने उसे समझ रखा था!

इस संसार को रचने में शायद उसका कुछ अच्छा ही प्रयोजन रहा हो जो वह अपनी अश्रद्धा के कारण न जान सका हो । अभी तक वह इस विश्वास में था कि मृत्यु के बाद इस जीवन का बिल्कुल अन्त हो जाता है । कहीं यह सत्य न हो ! तब फिर उसका क्या होगा ? उसने तो अपने आध्यात्मिक जीवन की कभी परवाह ही नहीं की ! कहीं जन्म भर वह ग़लत रास्ते पर तो नहीं चलता रहा ? कुछ ऐसे ही विचार उमर ख़य्याम के मन में आये होंगे और इन से उसको कितना तीव्र क्षोभ हुआ होगा इसकी हम स्वयँ कल्पना कर सकते हैं । संसार में इससे प्रचंड निराशा और क्या हो सकती है कि सारा जीवन जिन विश्वासों में बिताया गया हो मृत्यु के द्वार पर पहुंच कर वे ही भ्रमपूर्ण और मिथ्या प्रतीत होने लगें । प्रबल से प्रबल आत्मा इस निराशा के भार को नहीं सहन कर सकती । शायद इसी निराशा से बचने के लिये, इस निराश्रित जीवन में कोई आश्रय पाने की इच्छा से, सारा जीवन संशय और विद्रोह में बिताकर अन्त में एक आधार की आवश्यकता का अनुभव कर उसने साधारण रीतियों का पालन करना शुरू कर दिया होगा। उसका उनमें आन्तरिक विश्वास रहा होगा यह हमारे लिए मानना असंभव है; किंतु वे उस डूबते हुए को तिनके का सहारा हुई होंगी ।

उमर ख़य्याम के जीवन की एक और झलक हमें उसके शिष्य समरकंद निज़ामी के तारीख़-उल-कुदामा में मिलती है । वे लिखते हैं "मैं अपने गुरू उमर ख़य्याम से अक्सर बाग़ में ज्ञान-चर्चा किया करता था । एक दिन उन्होंने मुझ से कहा, "मेरी क़ब्र ऐसे स्थान पर होगी जहां उत्तरी वायु सदा गुलाब के फूलों की वर्षा करती रहेगी" । उनका यह कथन सुन कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ किन्तु मैं जानता था कि उनके वचन कभी व्यर्थ नहीं जाते । कई वर्षों के उपरांत जब मुझे नैशापूर जाने का संयोग प्राप्त हुआ तो मैं उनका अन्तिम विश्राम-स्थल देखने गया तो पहुंच कर क्या देखता हूँ कि सचमुच, जैसा उन्होंने कहा था, उनकी क़ब्र एक उद्यान के पार्श्व में ही थी और फूलों से लदे वृक्ष अपनी लंबी शाखाएं चहारदीवारी के बाहर फैलाये उनके समाधि-स्तंभ पर फूलों की निरंतर वृष्टि कर रहे थे ।"

उमरख़य्याम के जीवन के संबंध में जो घटनाएं ज्ञात हैं उनसे उसके

आन्तरिक जीवन पर और कोई प्रकाश नहीं पड़ता है। ईश्वर के प्रति ठीक २ उसका क्या भाव था—उसके विचार जीवन भर सदा एकसे रहे या उनमें कभी कोई परिवर्तन हुआ—तथा उसकी कविता में कोई गूढ़ार्थ है या नहीं इत्यादि प्रश्न ऐसे हैं जिनके बारे में यदि हम उसके जीवन से कोई उत्तर जानना चाहें तो व्यर्थ है। उसकी कविता से भिन्न २ समालोचकों ने अपने २ मन के अनुसार भिन्न २ अर्थ निकाले हैं। कोई उसे सूफ़ी-मतानुयायी भक्ति-मार्गावलंबी पवित्रात्मा समझता है; कोई कहता हैं वह एपिक्यूरस के मत का मानने वाला जड़वादी नास्तिक था जो "खाओ, पिओ, और आनंद करो" वाले सिद्धांत को मानता था। कोई समझता है वह कट्टर मुसलमान था और कोई उसे पाखंडी और अधर्मी बतलाता है। कोई कुछ कहता है, कोई कुछ। उमरख़य्याम काव्य-प्रेमियों के लिये एक विवाद का विषय हो गया है। सब लोग उसकी कविता के कायल हैं, किंतु कोई उसके किसी गुण की उपासना करता है कोई किसी की। उमरख़य्याम में सब प्रकार के लोगों को संतुष्ट करने की शक्ति है। उसकी कविता जो कोई पढ़ता है वह उसे अपने ही रंग में रंग लेता है। उसकी काव्य-मदिरा में डूब कर सब लोग अपनी सांसारिक यातनाओं को कुछ काल के लिये भूल जाते हैं। उसकी कविता एक बृहत् रूपक है अथवा नहीं, मदिरा से उसका अर्थ अंगूरी शराब से है या भगवद् भक्ति से, समालोचकों के इस वाद-विवाद से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं। यहाँ उमरख़य्याम है और यहां वे हैं—दोनों के हृदयों से एक ही झंकार निकल रही है; जो उसके मन के भाव हैं वही उनके हैं; संसार की उलझनों से वह जितना थका हुआ है उतने ही वे भी; विश्राम और शांति की उन्हें जितनी आवश्यकता है उतनी ही उसे भी। तब फिर एकबार क्यों न ढल जाये शीराज़ी मदिरा और बज उठे कवि की हृदय-तंत्री, जिससे सारा संसार गूंज उठे और यह पृथ्वी एक मरीचिकामय मरु-भूमि होने के बदले एक नन्दन-वन बन जाय। उमरख़य्याम आज जीवित है क्यों कि उसने जीवन-मृत्यु के भार से पीड़ित मानव आत्मा को ठीक २ पहचान कर उसे अपनी अमर-वाणी में जिस निर्द्वन्द्वता के साथ व्यक्त किया है वैसा और किसी ने नहीं किया। उसने उन हृदयों को संतोष और शांति पहुंचाई है जो संसार में एक

कृतज्ञता-प्रकाश

मेरी आत्मा का आग्रह है कि मैं अपने उन उदार मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ जिन्होंने अपनी अमूल्य सम्मति, सहायता तथा सत्परामर्श द्वारा मुझे समय २ पर समुचित उत्साह प्रदान कर इस अनुवाद को सफल बनाने में मेरा साथ दिया है। अतएव यहाँ मैं उन सज्जनों के नाम दे देना चाहता हूँ।

१ श्री मनोहर कृष्ण गोलवलकर बी० ए०, एल एल० बी०
२ श्री महादेवप्रसाद वर्मा 'सामी'
३ श्री रामप्रसाद तिवारी बी० ए०, एल एल० बी०
४ प्रो० रमेश दत्त पाठक एम० ए०, एल एल० बी०
५ श्री पुरुषोत्तमलाल तिवारी बी० ए०
६ प्रिन्सिपल डबल्यू० एस० रोलेन्ड्स बी० ए० (आक्सन)
७ प्रो० शिवप्रसाद वर्मा एम० ए०, पी० एच० डी०
८ श्री दशरथलाल श्रीवास्तव
९ श्री देवकीनंदन भार्गव

रुबाइयात उमर खय्याम

One

AWAKE ! for Morning in the Bowl of Night
Has flung the Stone that puts the Stars to Flight:
And Lo ! the Hunter of the East has caught
The Sultan's Turret in a Noose of Light.

एक

जाग प्रिये ! आकर प्रभात ने किया पलायित तारक-दल,
मधुर यामिनी के मधु भाजन में प्रवेग से फेंक उपल,
प्राची के मृगयाचारी ने ज्योति-जाल को फैला कर,
बाँध लिया लो अवनी-पति का वह उन्नत प्रासाद-शिखर ।

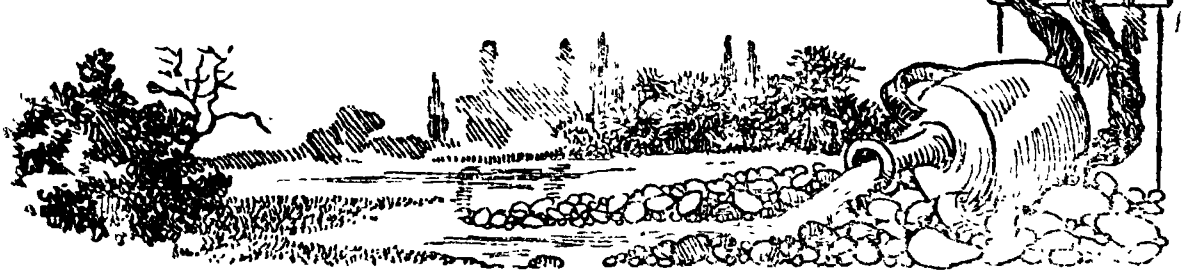

Two

Dreaming when Dawn's Left Hand was in the Sky
I heard a Voice within the Tavern cry,
'Awake, my Little ones, and fill the Cup
Before Life's Liquor in its Cup be dry.'

दो

अँगड़ाता था अरुण खड़ा जब बढ़ा वाम कर अम्बर में
मुझे सुन पड़ा स्वप्न-राज्य में तब यह स्वर मदिरा घर में,
'व्यर्थ सूखने के पहले ही जीवन-प्याली में हाला
जाग जाग, अय मेरे शिशु-दल, ढाल ढाल मधु, पी प्याला'।

Three

And, as the Cock crew, those who stood before
The Tavern shouted—'Open then the Door!
You know how little while we have to stay,
And, once departed, may return no more.'

तीन

प्रात समय कुक्कुट ने उठकर कुकरूँ कूँ जब कहा पुकार
मदिरा-गृह के बाहर यात्री बोल उठे—'तब खोलो द्वार !
कितने दिन हमको रहना है यहाँ जानते हो तुम भी,
एकबार जाने पर, सम्भव है, आसकें न पुनः कभी'।

Four

Now the New Year reviving old Desires,
The thoughtful Soul to Solitude retires,
Where the White Hand of Moses on the Bough
Puts out, and Jesus from the ground suspires.

चार

विरस वासनाओं में भरता नूतन वर्ष नवीन विकास,
हो विरक्त चिंतन-रत मानव चला विजन में करने वास,
निकल धवल करतल मूसा का तरु पर करता जहां प्रकाश,
उठता भूतल से ईसा का जग में जीवन-प्रद उच्छ्वास।

Five

Iram indeed is gone with all its Rose,
And Jamshyd's Sev'n-ring'd Cup where no one knows;
But still the Vine her ancient Ruby yields,
And still a Garden by the Water blows.

पांच

माना, इरम विलीन हो गया ले अपनी पाटल-माला,
हुआ लापता जमशेदी भी सप्त चक्र वाला प्याला;
पर अंगूर आज भी देता चिर कालिक मानिक का दान,
और विहँसता सलिल कूल पर अब भी एक सरस उद्यान।

Six

And David's Lips are lock't; but in divine
High piping Pehlevi, with "Wine! Wine! Wine!
Red Wine!"—the Nightingale cries to the Rose
That yellow Cheek of hers to incarnadine

छ:

मौन हुआ दाऊद, नहीं अब सुन पड़ता है उसका गान,
पर अति शुद्ध देव-वाणी में कोमल मीठे स्वर कुछ तान,
कहती है बुलबुल गुलाब से 'मधु दो, मधु दो, मधु दो लाल'!
रक्तिम आभा से रँग उठते पीत वर्ण पाटल के गाल।

Seven

Come, fill the Cup, and in the Fire of Spring
The Winter Garment of Repentance fling:
The Bird of Time has but a little way
To fly—and Lo! the Bird is on the Wing.

सात

आ प्रियतमे ! डाल प्याली में होने दे आसव का पान
होमित कर मधु की होली में मनस्ताप का हिम-परिधान,
समय-विहंगम को थोड़ा ही पथ करना उड़कर है पार
और देख ! उड़ चला कीर वह अपने दोनों पंख पसार ।

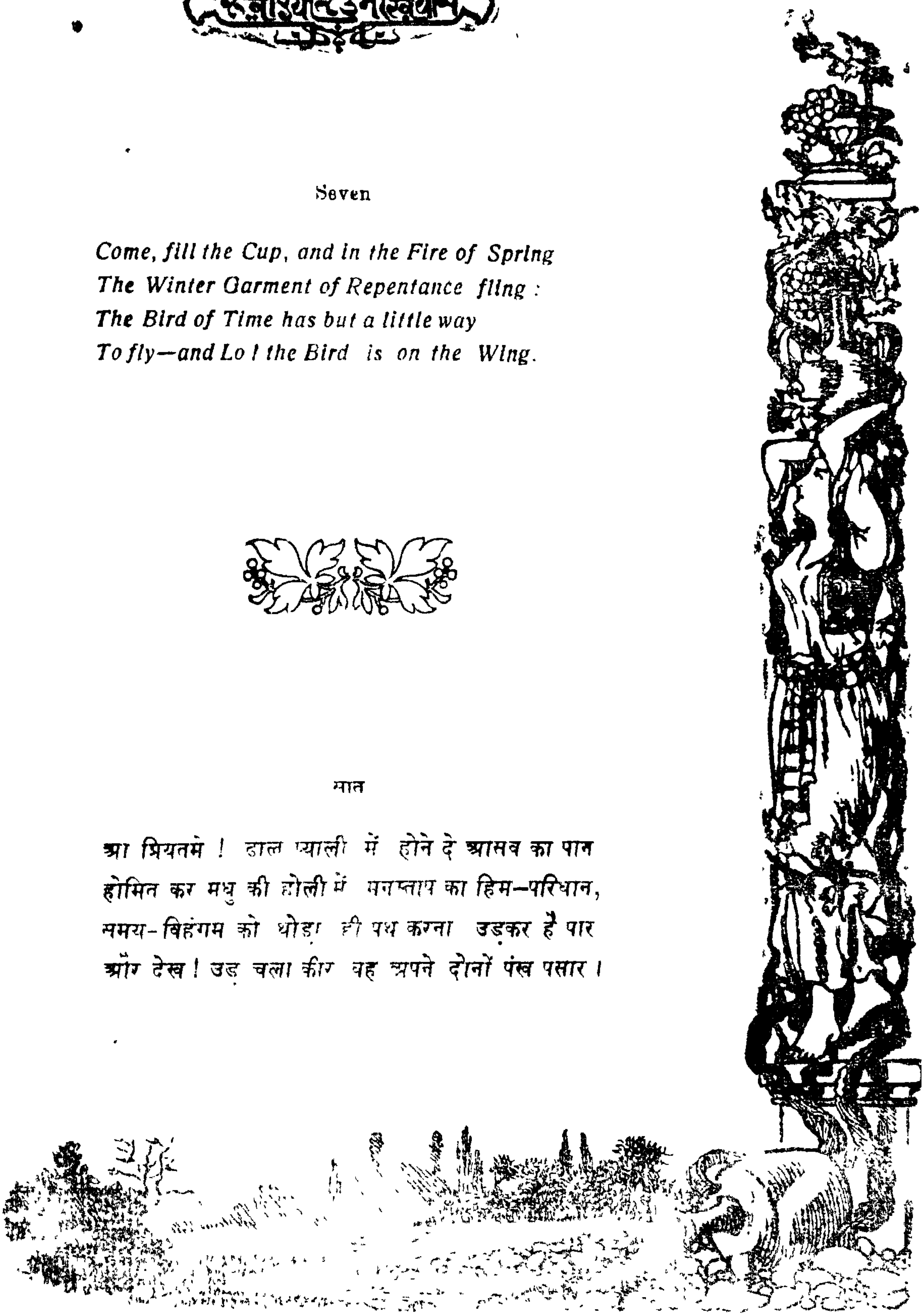

Eight

And look—a thousand Blossoms with the Day
Woke—and a thousand scatter'd into Clay;
And this first Summer Month that brings the Rose
Shall take Jamshy'd and Kaikobad away.

आठ

देख, दिवस के साथ सहस्रों सुमन अभी हैं उठे सिहर
औ गिर कर भूपर उतने ही फूल धूल में गये बिखर :
यह बालक बसन्त आता जो आज गुलाब साथ लेकर
कैकुबाद जमशेद आदि को ले जाएगा हमसे हर।

Nine

But come with old Khayyam, and leave the Lot
Of Kaikobad and Kaikhosru forgot :
Let Rustum lay about him as he will,
Or Hatim Tai cry Supper—heed them not.

चले गये विस्मृति में जो अब वे कैखुसरू कैकोबाद
छोड़, आज ख़य्याम-संग तू आ, बिसरा दे उनकी याद :
जैसा जिस पर चाहे रुस्तम करने भी दे उसे प्रहार,
दे न ध्यान चाहे रुस्तम हो भोजन के हित रहा पुकार।

Ten

With me along some Strip of Herbage strown
That just divides the desert from the sown
Where name of slave and Sultan scarce is known
And pity Sultan Mahmud on his Throne

दस

विस्तृत किसी हरी क्यारी में कान्ते आ मेरे सँग चल
शस्य श्यामला जहाँ मही से विदा ले रहा हो मरु-थल,
जहाँ न शासक और दास के नाम कभी जाने जाते
देख गजनवी को गद्दी पर हम हों जहाँ तरस खाते।

Eleven

Here with a Loaf of Bread beneath the Bough
A Flask of Wine, a Book of Verse—and Thou
Beside me singing in the Wilderness—
And Wilderness is Paradise enow.

ग्यारह

इस कदम्ब के तले स्वल्प यदि पाता मैं आहार कहीं,
मिलती मधु की प्याली, होता अमर गीत भी साथ कहीं,
बैठ पास में स्वर भर कर यदि गुंजित करती तू कानन,
मेरे लिए प्रिये बन जाता वही विजन तब नंदन वन।

Twelve

How sweet is mortal Sovranty !' think some;
Others—'How blest the Paradise to Come !
Ah, take the Cash in hand and waive the Rest;
Oh, the brave Music of a distant Drum !

बारह

कुछ विचारते–मधुमय कितना यह ऐहिक ऐश्वर्य अपार,
कुछ कहते–मंगलमय कितना आनेवाला स्वर्ग उदार;
जो सम्मुख है लो सम्हाल वह शेष सभी दो जाने भी,
अरे ! दूर के ढोल सर्वदा लगते हैं सुहावने ही ।

Thirteen

Look to the Rose that blows about us—"Lo,
Laughing," she says, " into the World I blow :
At once the silken Tassel of my Purse
Tear, and its Treasure on the Garden throw."

तेरह

सुमुखि देख सम्मुख पाटल यह कहता है क्या खिल खिलकर
"भर उर में उल्लास–हास मैं हँसता हूँ अवनीतल पर:
अपनी विभव-विलास-ग्रन्थि के कौश सूत्र को फिर क्षण में
विदलित कर बिखेर देता हूँ सारी निधि इस उपवन में"।

Fourteen

The Worldly Hope men set their Hearts upon
Turns Ashes—or it prospers; and anon,
Like Snow upon the Desert's dusty Face
Lighting a little Hour or two—is gone

चौदह

सांसारिक आशा करती जो मानव के मन को मोहित
मिल जाती मिट्टी में अथवा फल लाती वह और त्वरित,
मरु-प्रदेश के धूल-धूसरित आनन पर हिम-राशि समान
आलोकित हो घड़ी दो घड़ी हो जाती फिर अन्तर्धान ।

Fifteen

And those who husbanded the Golden Grain,
And those who flung it to the Winds like Rain,
Alike to no such aureate Earth are turn'd
As, buried once, Men want dug up again.

पन्द्रह

परिमित व्यय कर कनक धान्य का जिनने सदा किया संचय,
या वर्षा-जल सदृश पवन में लुटा किया जिनने अपव्यय,
मरने पर ऐसी स्वर्णिक रज नहीं कभी वे बन जाते
धरणि तले जाने पर जिसको मानव फिर से खनवाते।

Sixteen

Think, in this battere'd Caravanserai
Whose Doorways are alternate Night and Day,
How Sultan after Sultan with his Pomp
Abode his Hour or two, and went his way.

सालह

रात और दिन क्रम से जिसके आने जाने के हैं द्वार
टूटी-फूटी इस सराय में प्रेयसि तू ही स्वयं विचार,
आये कैसे वैभवशाली कितने यहाँ शाह पर शाह,
पल दो पल मिहमान रहे वे और चल दिये अपनी राह।

Seventeen

They say the Lion and the Lizard keep
The Courts where Jamshyd gloried and drank deep ;
And Bahram, that great Hunter—the Wild Ass
Stamps o'er his Head, and he lies fast asleep.

सत्रह

कल जमशेद जहाँ सदर्प था पीता मधु प्रमत्त होकर
कहते, उन्ही राजद्वारों में विचर रहे केहरि सूकर,
वह बहराम शिकारी भीषण वनचर खर कर पाद–प्रहार
ठुकराता उसका सिर पर वह सोता है अब पैर पसार।

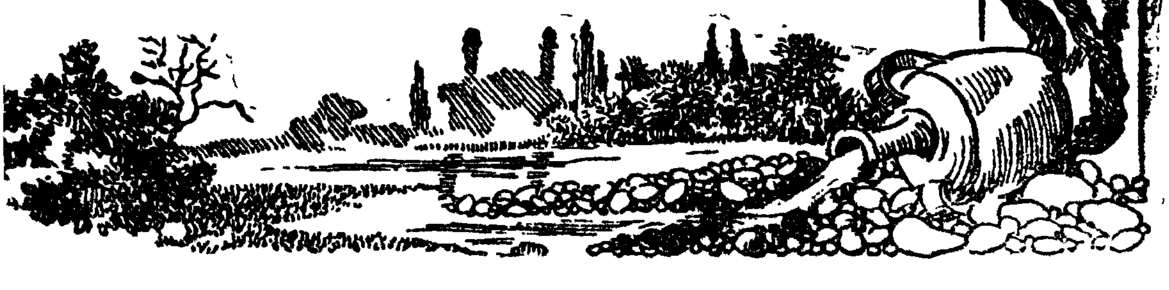

Eighteen

I sometimes think that never blows so red
The rose as where some buried Caesar bled;
That every Hyacinth the Garden wears
Dropt in its Lap from some once lovely Head.

अठारह

रक्तफूल खिलता न कभी भी इतना जितना लाल वहाँ
समर-चिता में किसी भीष्म का रक्त-पात था हुआ जहाँ,
औ मधुपुष्प जिसे उपवन है रहा गोद में अपनी धार
गिरा किसी गत मधु मुख से वह—मन में उठते कभी विचार।

Nineteen

And this delightful Herb whose tender Green
Fledges the River's Lip on which we lean—
Ah, lean upon it lightly! for who knows
From what once lovely Lip it springs unseen!

उन्नीस

यह रमणीय वनस्पति जिसकी मृदुल हरित से है विलसित
जलमाला का अधर प्रांत यह जिस पर हम दोनो आश्रित,
आह, तनिक आश्रय ले धीमे तन्वि ! कौन सकता है कह
किसके विस्मृत मधुर अधर से हुई उच्छ्वसित अविदित यह !

Twenty

Ah, my Beloved, fill the Cup that clears
To-day of past Regrets and future Fears—
To-morrow ? Why, To-morrow I may be
Myself with yesterday's Sev'n Thousand years.

बीस

आशंका अनुशोक आदि हर करती है जो 'आज' विशद
मेरी इस मधु की प्याली में मधु-वाले आ भर दे मद,
'कल'-कैसा कल ! क्यों कर कल को तू ही कह मैं अपनाऊं,
सम्भव है, कल तक गत कल की शताब्दियों में मैं मिल जाऊं।

Twentyone

Lo! some we loved, the loveliest and best
That Time and Fate of all their Vintage prest,
Have drunk their Cup a Round or two before,
And one by one crept silently to Rest.

इक्कीस

लो, हम सब के बने हुए थे जो आराध्य मनोज्ञ प्रवर
नियति, काल ने बरबस जिनका आज लिया सारा मधु हर,
अभी एक दो दौर पूर्व ही पी पी कर अपने प्याले
एक एक कर धीरे धीरे सोये भू पर मतवाले।

Twentytwo

And we, that now make merry in the Room
They left, and Summer dresses in new Bloom,
Ourselves must we beneath the Couch of Earth
Descend, ourselves to make a Couch—for whom?

बाईस

हम सब जो भरते हुलास से उनका यह परित्यक्त निवास,
आज साज सज रहा जहाँ है नव किसलय ले ले मधु मास,
अवनि-मंच के तले पहुँच हम एक दिवस होवेंगे मौन,
स्वयँ इसी को सेज बना तब क्रीड़ा करता होगा कौन ?

Twentythree

Ah, make the most of what we yet may spend,
Before we too into the Dust descend;
Dust into Dust, and under Dust, to lie,
Sans Wine, sans Song, sans Singer, and—sans End!

तेईस

अभी धूल में मिल जावेंगे दोनों यहीं प्रिये हम लोग,
कर ले उसके पूर्व, मिला जो, उसका ही समुचित उपयोग,
हैं हम धूल, धूल में जाना, धूल—तले सोना, हा हन्त ।
होगा वहाँ न गीत, न गायक और न मद्य, न कोई अन्त ।

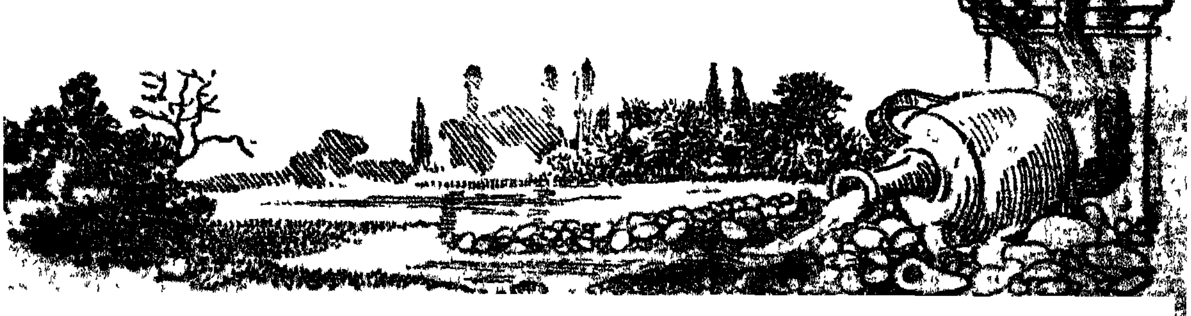

Twentyfour

Alike for those who for To-day prepare,
And those that after a To-morrow stare,
A Muezzin from the Tower of Darkness cries
'Fools! your Reward is neither Here nor There!

चौबीस

नित्य जुटाते सामग्री जो सदा 'आज' की कर परवाह,
फाड़ फाड़ कर आँखें या जो तकते रहते 'कल' की राह,
तिमिर-भवन के उच्च शिखर से कहता एक फकीर पुकार—
"मूर्खों! यहाँ न वहाँ कहीं भी मिलना है तुमको उपहार!"

Twentyfive

Why, all the Saints and Sages who discuss'd
Of the two Worlds so learnedly, are thrust
Like foolish Prophets forth; their Words to Scorn
Are scatter'd, and their Mouths are stopt with Dust.

पच्चीस

दोनों लोकों की विवेचना करते थे जो विज्ञ बने,
साधु-संत वही मिट्टी में मूर्ख सिद्ध सम आज सने
और उपेक्षा सहने जग की बिखर रहे सारे सिद्धान्त,
मुँह में धूल भर रही उनके वाणी हुई सदा को शान्त।

Twentysix

Oh, come with old Khayyam, and leave the Wise
To talk ;one thing is certain, that Life flies ;
One thing is certain, and the Rest is Lies ;
The flower that once has blown for ever dies.

छब्बीस

इस खय्याम-संग आ विज्ञों की विवेचना को तज कर,
निश्चित है इतना–जीवन यह जाता है द्रुत गति धर कर,
केवल इतना ही निश्चित है, अन्य असत्य अलीक असार
कुम्हला जाता कुसुम सदा को विकसित होने पर इक बार ।

Twentyseven

Myself when young did eagerly frequent
Doctor and Saint, and heard great Argument
About it and about : but evermore
Came out by the same Door as in I went.

सत्ताईस

अपने युवा काल में मैं भी ले कौतूहलमय कुछ आस,
पहुँचा करता था बहुधा वर पंडित, योगी जन के पास,
इसके या उसके प्रसंग में सुने विवाद-प्रमाण अनेक,
आया गया किन्तु वैसा ही और द्वार भी था वह एक।

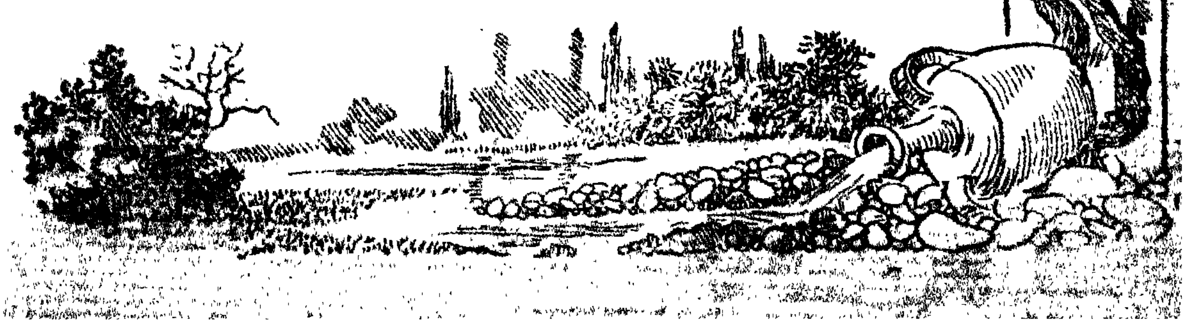

Twentyeight

With them the Seed of Wisdom did I sow,
And with my own hand labour'd it to grow:
And this was all the Harvest that I reap'd—
" I came like Water, and like Wind I go."

अट्ठाइस

उनके साथ साथ ही मैंने बोया था विद्या का बीज,
उसे बढ़ाने को सेवा थी की अपने हाथों जल सींच,
किन्तु सभी कष्टों के बदले मिला मुझे इतना ही ज्ञान—
"आया था तब पानी-सा मैं और चला अब पवन-समान।"

Twentynine

Into this Universe, and why not knowing,
Nor whence, like Water willy-nilly flowing
And out of it, as Wind along the Waste,
I know not whither, willy-nilly blowing.

उनतीस

इस जगती में क्यों आया मैं, नहीं पता इसका रहता,
और कहाँ से, नहीं ज्ञात कुछ, जल सम ही परवश बहता,
बाहर विवश चला जाता फिर मरु में चलता पवन यथा,
वह भी कहाँ, नहीं कह सकता, है रहस्यमय एक कथा।

Thirty

What, without asking, hither hurried whence?
And, without asking, whither hurried hence!
Another and another Cup to drown
The Memory of this Impertinence!

तीस

क्या, मेरी इच्छा बिन, मुझ को दिया कहाँ से यहाँ ढकेल ?
और किधर, फिर मन से अपने, दिया यहाँ से मुझ को ठेल !
प्याले पर प्याला ढुलकाता, रहता हूँ मैं मद में चूर,
बेसुध हो सो जाए जिससे इस अशिष्टता की स्मृति क्रूर।

Thirtyone

Up from Earth's Centre through the Seventh Gate
I rose, and on the Throne of Saturn sate,
And many Knots unravel'd by the Road;
But not the Knot of Human Death and Fate.

एकतीस

मर्त्य–लोक के मध्य भाग से ऊर्ध्व मार्ग में किया प्रयाण
सप्तम द्वार पार करने पर पाया शनि का उच्च–स्थान,
कितने ही रहस्य का मैंने किया मार्ग में उद्‌घाटन,
पर पा सका न मैं मानव के जन्म-मरण का मर्म गहन।

Thirty two

There was a Door to which I found no Key:
There was a Veil past which I could not see:
Some little Talk awhile of Me and Thee
There seem'd—and then no more of Thee and Me.

बत्तीस

पा न सका मैं ताली जिसकी ऐसा एक वहां था द्वार,
परदा एक पड़ा था जिसके नहीं सूझता था उसे पार,
मेरी–तेरी चर्चा होते दीख पड़ी केवल पल चार,
इसके बाद मिट गया सहसा मैं–तू का सारा व्यापार।

Thirtythree

Then to the rolling Heav'n itself I cried,
Asking " What Lamp had Destiny to guide
Her little Children stumbling in the Dark ? "
And— " A Blind Understanding !" Heav'n replied.

तैंतीस

तब विभ्रान्त व्योम से मैंने कातर स्वर में कहा पुकार
"भटक तिमिर में ठोकर खाता स्वयँ नियति का शिशु-संसार;
मार्ग-प्रदर्शक किस प्रदीप का दिया देवि ने इसे प्रकाश ?"
" अन्धी एक धारणा केवल ! " बोला उत्तर में आकाश ।

Thirtyfour

Then to this earthen Bowl did I adjourn
My Lip the secret Well of Life to learn:
And Lip to Lip it murmur'd—"While you live
Drink!—for once dead you never shall return.'

चौंतीस

मिट्टी की प्याली पर आकर तब मैंने रखा दिया अधर
जीवन के उस गुप्त स्रोत का पाने को रहस्य गुरुतर,
अधर हिले उसके, वह मुझ से बोली अति धीमा स्वर कर—
"पीता जा ! फिर आ न सकेगा एकबार मर जाने पर "।

Thirtyfive

I think the Vessel, that with fugitive
Articulation answer'd, once did live,
And merry-make : and the cold Lip I kiss'd,
How many Kisses might it take—and give!

पैंतीस

मैं विचारता जिस प्याली ने दिया क्षण-स्थायी उत्तर,
जीवित थी, क्रीड़ा करती थी एक समय वह भी भूपर,
चूमा जिसको मैंने हा ! वह शीतल चेष्टा-हीन अधर
कितने ही चुम्बन का विनिमय कभी स्वयँ सकता था कर।

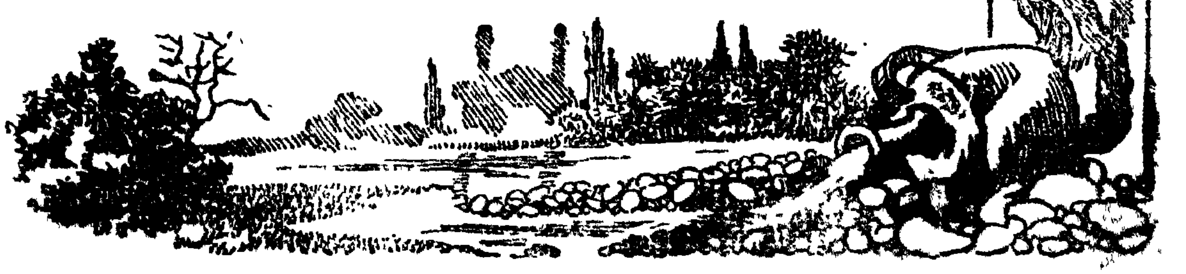

Thirtysix

For in the Market-place, one Dusk of Day,
I watch'd the Potter thumping his wet Clay:
And with its all obliterated Tongue
It murmur'd—"Gently, Brother, gently pray!"

छत्तीस

देखा था उस दिन संध्या को वहाँ हाट में एक कुम्हार,
मिट्टी गीली निज कर से वह पीट रहा था बारम्बार,
नष्ट-प्राय जिह्वा से अपनी कहती थी वह यह अविराम
"बन्धु तनिक धीमे धीमे इन अपने हाथों से लो काम"।

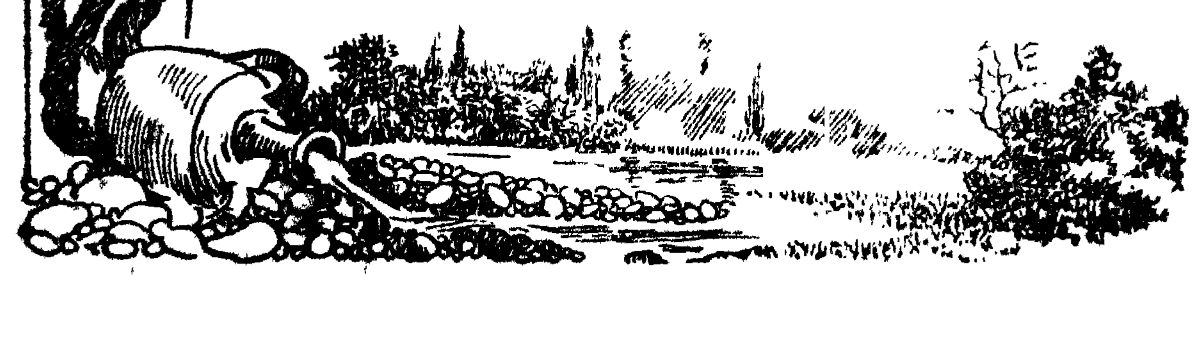

Thirtyseven

Ah, fill the Cup :—what boots it to repeat
How Time is slipping underneath our Feet
Unborn To-morrow, and dead Yesterday,
Why fret about them if To-day be sweet !

सैंतीस

अह, प्याली भर, बार बार यह रटने से होगा क्या फल—
"अपने पद-तल के नीचे से कैसा भाग रहा प्रति पल,"
जिसका जन्म नहीं औ गत जो ऐसे 'कल' की वह कलकल
करे विकल क्योंकर मुझको यदि होवे मधुमय 'आज' सफल।

Thirtyeight

One Moment in Annihilation's Waste,
One Moment, of the Well of Life to taste—
The Stars are setting and the Caravan
Starts for the Dawn of Nothing—Oh make haste!

अड़तीस

प्रलयकाल के इस विनाश में मिला तुझे पल भर केवल,
आह, शीघ्रता कर! अम्बर में अस्त हो चला तारक-दल,
महाशून्य के अरुणोदय की ओर चल पड़े यात्री जन,
जीवन-निर्झर का पल में ही कर लेना है आस्वादन।

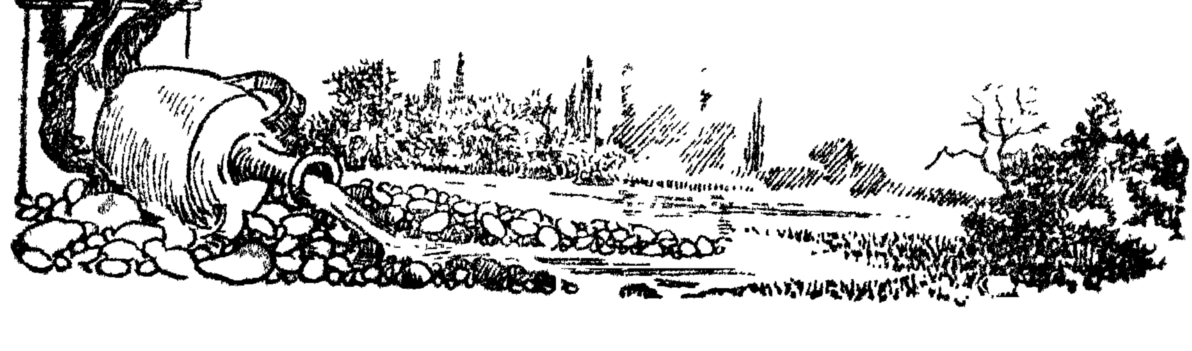

Thirtynine

How long, how long, in infinite Pursuit
Of This and That endeavour and dispute?
Better be merry with the fruitful Grape
Than sadden after none, or bitter, Fruit.

उनतालीस

कब तक अन्त हीन चेष्टा यह, कब तक तुझे करेगी त्रस्त,
इस प्रयत्न या उस वितर्क में रहना होगा कब तक ग्रस्त ?
कटु फल पा या फल-अभाव से चित में अति दुःखित होना,
इस से तो अच्छा फलदायी आसव ले प्रमुदित होना।

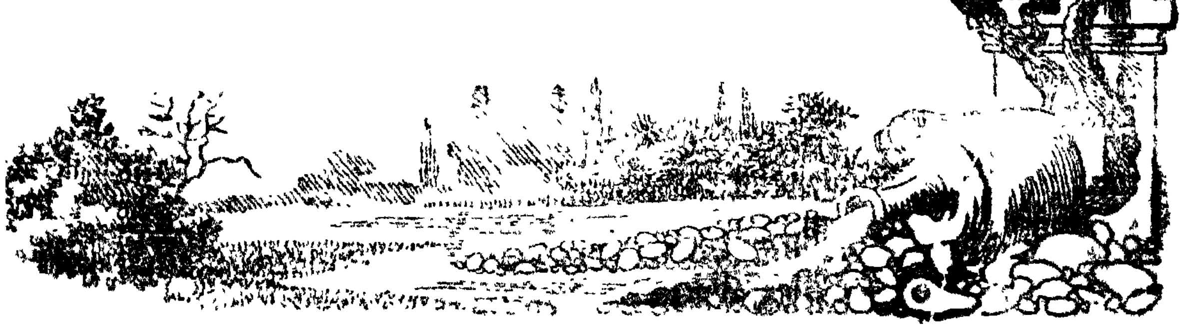

Forty

You know, my Friends how long since in my House
For a new Marriage I did make Carouse:
Divorced old barren Reason from my Bed,
And took the Daughter of the Vine to Spouse.

चालीस

मित्रो ! तुम्हें ज्ञात है, मेरे गृह पर कितने दिन ही पूर्व
नव विवाह के अतुल हर्ष में मधु–उत्सव था मचा अपूर्व,
जब अपना सम्बन्ध सदा को वृद्धा बाँझ तर्क से तोड़,
मधुमय मधु–बाला से मैंने नाता लिया नेह का जोड़।

Fortyone

For "Is" and "Is-not" though with Rule and Line
And "Up-and-down" without, I could define,
I yet in all I only cared to know,
Was never deep in anything but—Wine

एकतालीस

'अस्ति- नास्ति' का कर सकता था यद्यपि यथा-शास्त्र में अर्थ
'ऊपर-नीचे' की व्याख्या में तर्क-युक्ति ले हुआ समर्थ,
किन्तु कभी यदि किसी विषय की मैंने कुछ भी की परवाह,
हाँ, तब वह मदिरा थी केवल था मैं जिसमें गया अथाह।

Fortytwo

And lately, by the Tavern Door agape,
Came stealing through the Dusk an Angel Shape
Bearing a Vessel on his Shoulder; and
He bid me taste of it: and 'twas—the Grape!

बयालीस

अभी सुरालय-द्वार खुले थे छिति पर था गोरज छायी,
देव-दूत की आकृति में थी मूर्ति एक धीरे आयी,
कंधे पर शोभित था उसके कान्तिवान कमनीय कलस,
मुझसे कहा-"स्वाद लो इसका"-यह क्या, था वह-द्राक्षारस !

Fortythree

The Grape that can with Logic absolute
The Two-and-Seventy jarring Sects confute :
The subtle Alchemist that in a Trice
Life's leaden Metal into Gold transmute.

तेंतालीस

जग के कलह-विवाद-युक्त हैं जो पथ-सम्प्रदाय अगणित
मध्वासव निज निपुण न्याय से कर देता उनको खंडित,
है विदग्ध रस-सिद्ध प्रवर यह पल में कर जो परिवर्तन
जीवन के निकृष्ट सीसे को देता बना विमल काँचन।

Fortyfour

The mighty Mahmud, the victorious Lord,
That all the black and misbelieving Horde
Of Fears and Sorrows that infest the Soul
Scatters and slays with his enchanted Sword

चौवालीस

त्रास, ताप, भय, भीति पुंज का कलुषित और अधर्मी दल
रह कर अन्तर के भीतर जो करता आत्मा को निर्बल,
लेकर मंत्र-सिद्ध असि कर में भेद उसे जो देता काट
है यह वह महमूद महीपति महाबली विजयी सम्राट ।

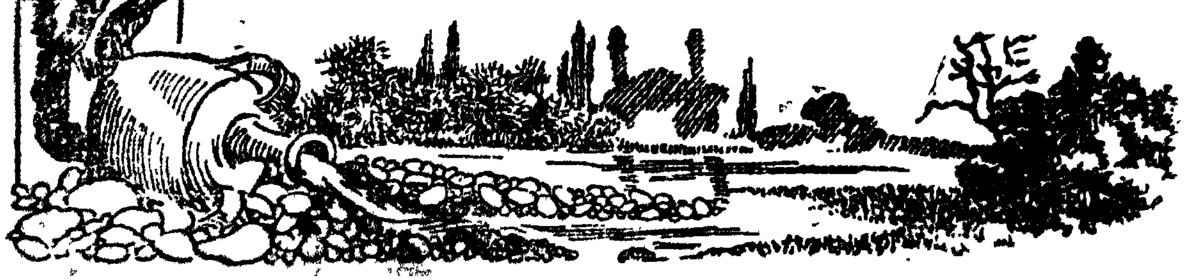

Fortyfive

But leave the wise to wrangle, and with me
The Quarrel of the Universe let be:
And, in some corner of the Hubbub coucht,
Make Game of that which makes as much of Thee.

पैंतालीस

झगड़ा करे झगड़ता है यदि आपस में सब विज्ञ समाज
मेरे लिए किन्तु होने दे बन्द द्वन्द्व जग का यह आज;
किसी दूरवर्ती कोने में कोलाहल के कर अधिवास,
हँसने दे मुझको भी उस पर करता जो तेरा उपहास।

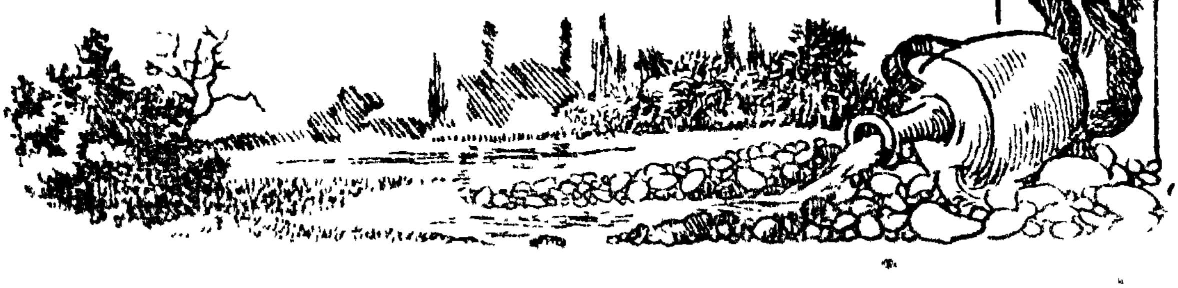

Fortysix

For in and out, above, about, below,
'Tis nothing but a Magic Shadow-show,
Play'd in a Box whose Candle is the Sun,
Round which we Phantom Figures come and go,

छियालीस

बाहर–भीतर, ऊपर–नीचे, आस–पास या यहाँ–वहाँ,
है केवल माया ही का सब विरचा छाया–खेल यहाँ,
पिंजर में खेला जाता है जिसका दीपक है दिनकर,
छाया चित्र हमी मानव हैं काट रहे जिसके चक्कर।

Fortyseven

And if the Wine you drink, the Lip you press,
End in the Nothing all Things end in—Yes—
Then fancy while Thou art, Thou art but what
Thou shalt be—Nothing—Thou shalt not be less

सैंतालीस

हाँ, इन अधर और आसव का करती तू जिनका नित पान,
यदि निश्चित है अन्त शून्य ही अन्य सभी के अन्त समान,
ठीक; सोच तब यह मन में तू जब तक चलती तेरी श्वास,
अभी वही है तू होगी जो—शून्य— न होगा तेरा ह्रास।

Fortyeight

While the Rose blows along the River Brink,
With old Khayyam the Ruby Vintage drink:
And when the Angel with his darker Draught
Draws up to Thee—take that, and do not shrink.

अड़तालीस

इस सरिता के तीर विहँसता है जब तक गुलाब अम्लान
अपने इस ख़य्याम-संग तू मानिक मदिरा का कर पान,
उससे भी काला प्याला जब लेकर काल-दूत आये,
कर ले तब स्वीकार उसे तू विचलित तनिक न हो पाये ।

Forty-nine

'Tis all a Chequered-board of Nights and Days
Where Destiny with Men for Pieces plays :
Hither and thither moves, and mates and slays,
And one by one back in the Closet lays.

उनचास

यह समस्त शतरँज का पट है दिव-निशि का सित-श्यामल मेल
मान जहाँ मुहरे मानव को नियति खेलती रहती खेल :
यहाँ वहाँ परिचालित करती, पराभूत कर देती मार,
एक एक कर पेटी में रख कर लेती उन का परिहार ।

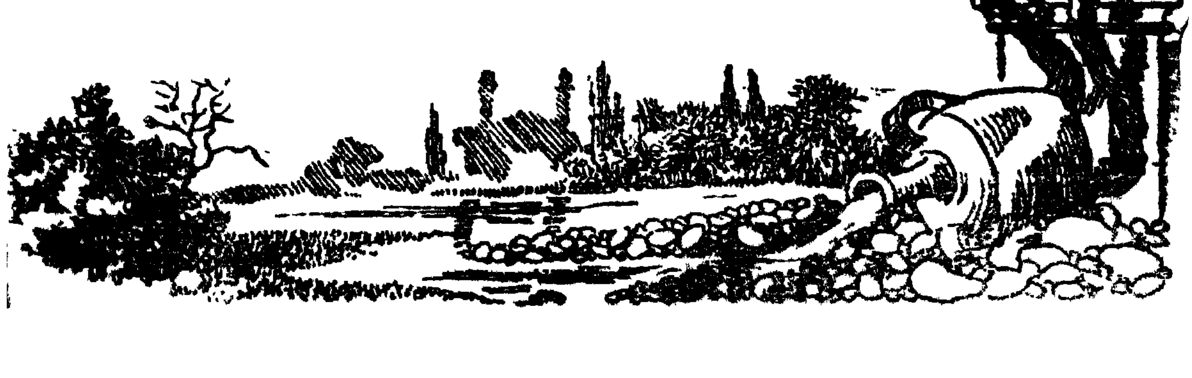

Fifty

The Ball no Question makes of Ayes and Noes,
But Right or Left as strikes the Player goes;
And He that toss'd Thee down into the Field,
He knows about it all—He knows—He knows!

पचास

'हाँ'-"ना" नहीं कभी करता है, कन्दुक तो सीधा जाता,
दक्षिण वाम खिलाड़ी जैसा उसे चाहता पहुँचाता,
और वही जिसने भूतल पर तुझको स्वयं दिया है डाल,
वही जानता है उसका सब—वही जानता है सब हाल।

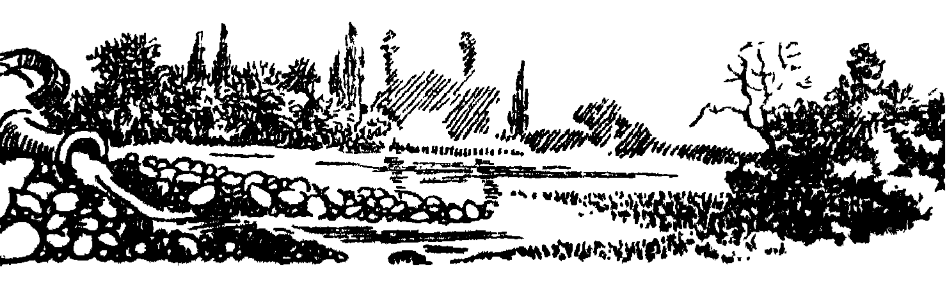

Fiftyone

The Moving Finger writes; and, having writ
Moves on : nor all thy Piety nor Wit
Shall lure it back to cancel half a Line,
Nor all thy Tears wash out a Word of it

इक्यावन

चपल अंगुली अचल लेख लिख अविचल आगे बढ़ जाती,
शुचिता या पटुता तेरी सब मोहित उसे न कर पाती,
अंकित अर्ध पंक्ति परिवर्तन को न कभी प्रस्तुत होती,
अविरल अश्रु-धार भी तेरी अक्षर एक नहीं धोती।

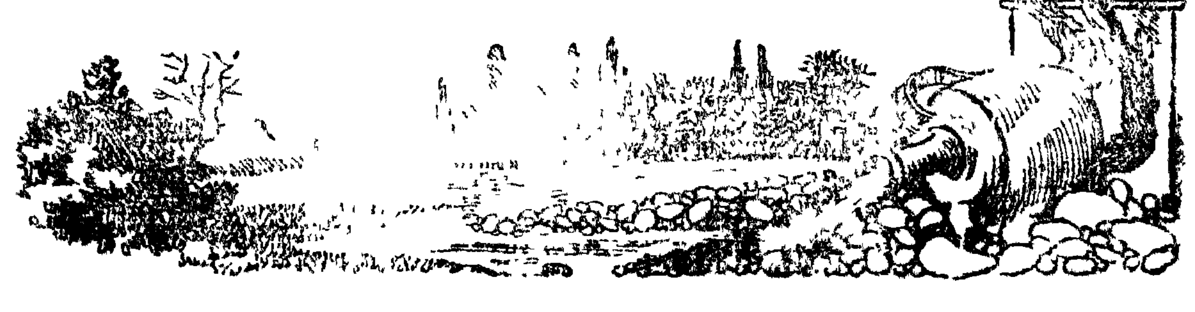

Fiftytwo

And that inverted Bowl we call The Sky,
Whereunder crawling coop't we live and die,
Lift not thy hands to It for help—for It
Rolls impotently on as Thou or I.

बावन

वह उलटी मधु–प्याली जिसको हम सब अम्बर बतलाते
तले रेंगते बन्दी बनकर जिसके जीते, मर जाते,
अञ्जलिबद्ध याचना उससे कर न व्यर्थ अवलम्बन की,
मेरे या तेरे समान ही परबस भटक रहा वह भी।

Fifty three

With Earth's first Clay They did the Last Man's knead,
And then of the Last Harvest sow'd the Seed:
Yea, the first Morning of Creation wrote
What the Last Dawn of Reckoning shall read.

तिरपन

भू की प्रथम धूल ले अन्तिम नर का पिंड बना तत्काल,
अन्तिम लव तक का तब पाहिले ही से दिया बीज सब डाल,
और सृष्टि की प्रथम उषा ने लिख डाला अक्षर अक्षर
लेखा का अन्तिम अरुणोदय खोलेगा जिसको आकर।

Fiftyfour

I tell Thee this— When, starting from the Goal,
Over the shoulders of the flaming Foal
Of Heav'n Parwin and Mushtara they flung,
In my predestin'd Plot of Dust and Soul

चावन

अम्बर-अश्वनीप के दोनों ऊपर कान्तिमय कन्धों पर,
कहता हूँ मैं यह तुझसे- चंचल लक्ष्य गृह जब तज कर,
मेरी आत्मा काया का था होता पूर्व विधान जहाँ,
दिया कृत्तिका बृहस्पती को उसने उसमें डाल वहाँ।

Fiftyfive

The Vine had struck a Fibre; which about
If clings my Being—let the Sufi flout;
Of my Base Metal may be filed a Key,
That shall unlock the Door he howls without

पचपन

इस अंगूर-वल्लरी में जो नव प्रतान की हुई प्रसूति,
रहे उसी में लग्न जीव यदि सूफ़ी की सहलूँ परिभूति,
बने निकृष्ट धातु से मेरी ऐसी कुञ्जी ताली अनमोल,
वह जिसके बाहर सिर धुनता, दे वह उसी द्वार को खोल।

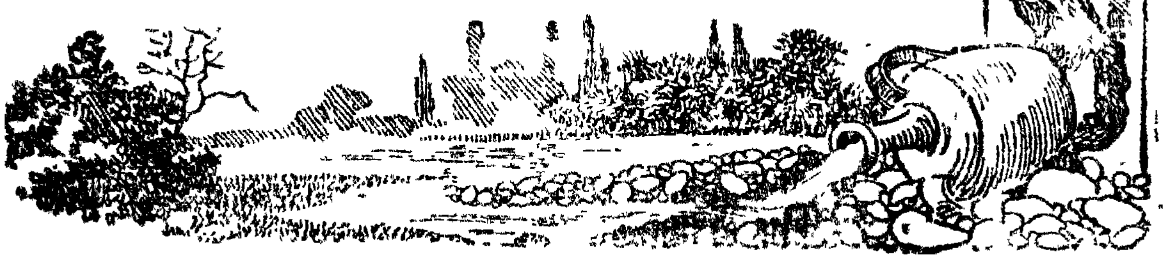

Fiftysix

And this I know : whether the one True Light,
Kindle to Love, or Wrath consume me quite,
One glimpse of It within the Tavern caught
Better than in the Temple lost outright.

छप्पन

सत्य ज्योति चाहे अन्तर में करे प्रेम का पुण्य प्रभात,
भस्म करे या क्रोधानल में पर इतना मुझको है ज्ञात,
यदि मदिरा–गृह में हम उसकी एक झलक हैं पा जाते
कहीं भला वह उस मन्दिर से जहां उसे खोया पाते।

Fiftyseven

Oh, Thou, who did'st with pitfall and with Gin
Beset the Road I was to wander in,
Thou wilt not with Predestination round
Enmesh me and impute my Fall to Sin?

सत्तावन

तू ही जिसने करना चाहा मुझको मेरे पथ से भ्रष्ट,
गूढ़ गर्त्त औ जाल बिछा कर मुझ को देना चाहा कष्ट,
नहीं फाँस लेगा मुझ को क्या डाल नियति का तू बंधन,
मढ़ देगा क्या नहीं पाप के माथे मेरा अधः पतन !

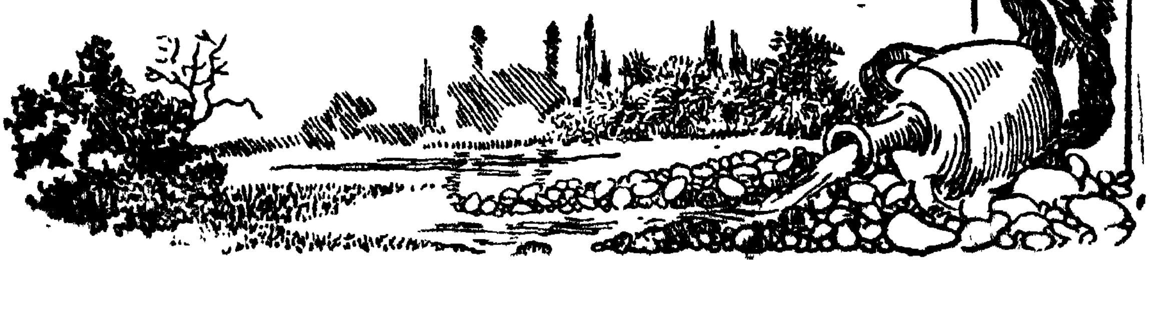

Fiftyeight

Oh, Thou, who man of baser Earth did'st make
And who with Eden did'st devise the Snake;
For all the Sin wherewith the Face of Man
Is blacken'd Man's Forgiveness give—and take!

अट्ठावन

तू ही जिसने दिया मनुज को कुत्सिततर मिट्टी का तन
और किया नन्दन निकुंज के संग अनंग का आयोजन,
जिन पापों ने किया कलंकित मानव का आनन अनजान,
उनके लिए क्षमा ले उसकी और उस कर क्षमा प्रदान।

Fiftynine

Listen again One evening at the Close
Of Ramazan, ere the better Moon arose
In that old Potter's Shop I stood alone
With the clay Population round in Rows

उनसठ

सन्ध्या थी रमजान माह का मास हो चुका था अवसान,
किन्तु ईद के सुखद चाँद का हुआ न था नभ में उत्थान,
मैं एकाकी खड़ा वहाँ था चिर परिचित था वही कुम्हार,
वह विक्रय-शाला थी भाजन चीपे थे चार ओर कतार।

Sixty

And, strange to tell among that Earthen Lot
Some could articulate, while others not:
And suddenly one more impatient cried—
"Who is the Potter, pray, and who the Pot?"

साठ

पाया अति विचित्र ही मैंने उन मृण्मय पात्रों का हाल,
कोई मूक और कोई था भाजन दीख रहा वाचाल,
अधिक अधीर एक उनमें से सहसा बोल उठा तत्काल—
"बतलादो यह मुझे कृपाकर कलस कौन है कौन कुलाल ?"

Sixtyone

Then said another—"Surely not in vain
My Substance from the common Earth was ta'en,
That He who subtly wrought me into Shape
Should stamp me back to common Earth again."

एकसठ

कहा एक ने "नहीं व्यर्थ था निश्चय ही ऐसा व्यवहार
साधारण मिट्टी से लेना मेरे लिए मूर्त-आधार
और ढाल देना साँचे में आकृति देकर मुझे रुचिर
परिणत करने को निज कर से प्राकृत पिण्ड-रूप में फिर"।

Sixtytwo

Another said—"Why, ne'er a peevish Boy,
Would break the Bowl from which he drank in Joy;
Shall He that made the Vessel in pure Love
And Fancy, in an after Rage destroy!"

बासठ

कहा एक ने "बालक भी यदि होगा सुलभ-कोप मतिमंद,
तोड़ेगा न कभी भाजन वह पान किया जिसने सानन्द,
सरल नेह औ कौतुक ही में जिसने कभी रचा भाजन,
क्या फिर पीछे क्रोध-विवश हो कर डालेगा वही निधन"?

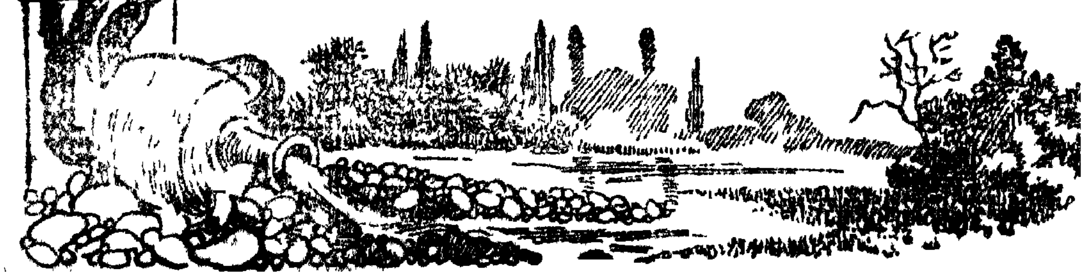

Sixtythree

None answer'd this; but after Silence spake
A Vessel of a more ungainly Make:
"They sneer at me for leaning all awry:
What! did the Hand then of the Potter shake?"

तिरसठ

सभी मौन थे, नहीं किसी ने उसे दिया कुछ भी उत्तर,
तब उससे कुरूपतर भाजन बोला नीरवता हर कर–
'मेरी बेढब आकृति को लख हँसते हैं वे सब मुझपर,
कहीं काँप तो नहीं गया था मेरे कुम्भकार का कर"।

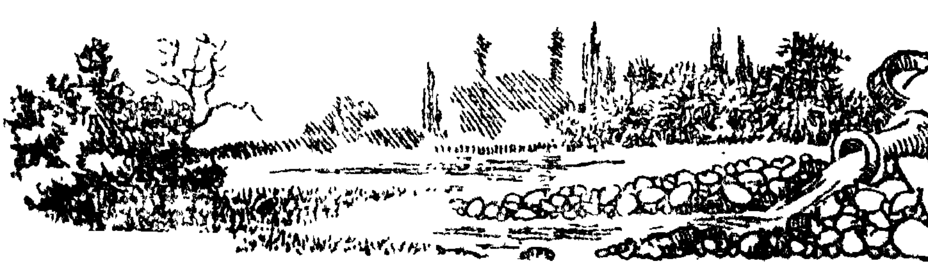

Sixtyfour

Said one—"Folks of a surly Tapster tell,
And daub his Visage with the Smoke of Hell,
They talk of some strict Testing of us—Pish!
He's a Good Fellow, and 't will all be well."

चौंसठ

बोला एक—क्रूर साकी का वर्णन करते हैं कुछ दल,
विकृत मुखाकृति कहते उसकी रौरव का दे कलुष पटल,
कठिन परीक्षा हम सब की वे बतलाते होना निश्चय,
हिए, सभी अच्छा ही होगा, छोड़ो भी, वह है सहृदय।

Sixtyfive

Then said another with a long-drawn Sigh,
" My Clay with long oblivion is gone dry :
But, fill me with the old familiar Juice,
Methinks I might recover by-and bye !"

पैंसठ

कहा दूसरे ने दुःखित हो लेकर एक साँस गम्भीर,
"जर्जर शुष्क हुआ है मेरा चिर विस्मृति से सभी शरीर;
पर मेरे उस परिचित रस से भरदो फिर मुझको इस बार,
सम्भव है, धीरे धीरे हो नूतन जीवन का सँचार।"

Sixtysix

So while the Vessels one by one were speaking,
One spied the little Crescent all were seeking :
And then they jogg'd each other, " Brother, Brother !
Hark to the Porter's Shoulder-knot a-creaking !"

छासठ

इतना एक एक कर क्रमशः भाजन बोल रहे थे जब,
लखा एक ने तब नवेन्दु वह जिसे खोजते थे वे सब,
"बन्धु ! सुनो वह !" बोले वे सब आपस में धक्के देकर,
"वह आ चली भार–वाहिक के काँवर की चरमर चरमर !"

Sixtyseven

Ah, with the Grape my fading Life provide,
And wash my Body whence the Life has died,
And in a Winding-sheet of Vine-leaf wrapt,
So bury me by some sweet Garden side.

सड़सठ

मेरे म्लान शुष्क जीवन में द्राक्षारस का हो उत्सेक,
मरने पर मदिरा ही से हो मेरा मृत–स्नान अभिषेक,
पहिनाना प्रेयसि, इस शव को द्राक्षा–पल्लव का बाना,
मधु–वन ही के किसी कुंज में सोने देना मनमाना ।

Sixtyeight

That ev'n my buried Ashes such a Snare
Of Perfume shall fling up into the Air,
As not a True Believer passing by
But shall be overtaken unaware.

अड़सठ

रज में मिलने पर भी मेरी मिट्टी का मधुमय उच्छ्वास
फेंकेगा उस पवन-प्रांत में परिमल का ऐसा दृढ़ पाश,
कोई भी धर्मान्ध पथिक जब उस पथ होकर जायेगा,
अविदित ही बन्दी अपने को सहसा उसमें पायेगा।

Sixtynine

Indeed the Idols I have loved so long
Have done my Credit in Men's Eye much wrong;
Have drown'd my Honour in a shallow Cup,
And sold my Reputation for a Song.

उनहत्तर

हाँ, सच है, मेरे जीवन के ये चिर आराधित आदर्श
आज कर चुके लोक-दृष्टि में मेरे ही यश का अपकर्ष;
एक क्षुद्र प्याली में मेरा डुबा चुके सारा सम्मान,
लुटा चुके गौरव-गाथा ले बदले में छोटासा-गान।

Seventy

Indeed, indeed, Repentance oft before
I swore—but was I sober when I swore?
And then and then came Spring, and Rose-in-hand
My thread-bare Penitence apieces tore

सत्तर

माना, पश्चात्ताप किया था, लीं थीं पहले शपथ अनेक,
पर क्या होश मुझे था तब कुछ या जाग्रत था स्वस्थ विवेक ?
तिस पर लिये गुलाब हाथ में उसी समय आ गया वसन्त,
व्रत की झीनी झीनी चादर टूक टूक हो गई तुरन्त ।

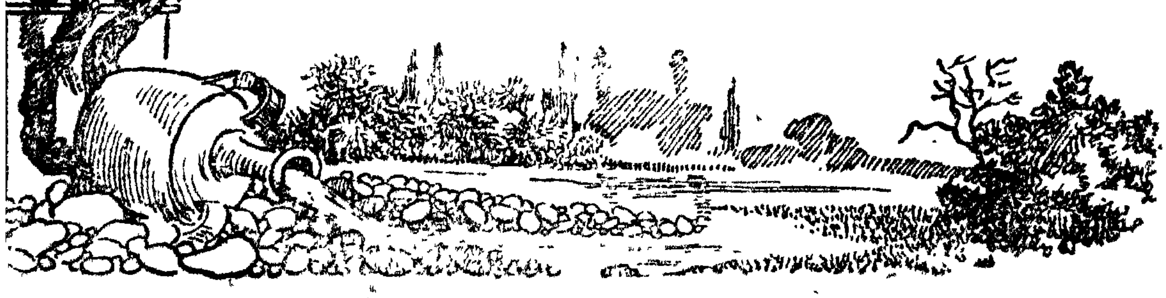

Seventyone

And much as Wine has play'd the Infidel,
And Robb'd me of my Robe of Honour—well,
I often wonder what the Vintners buy
One half so precious as the Goods they sell.

एकहत्तर

हाँ, विश्वास-घातिनी निकली मुझसे ही मेरी माध्वीक,
छीना, आह, मान का बाना—हाँ, यह भी तो है सब ठीक,
पर मधु-विक्रेता ही को लख होता हूँ मैं विस्मय में,
पाता आधा मूल्यवान भी कौन द्रव्य वह विनिमय में।

Seventy two

Alas, that Spring should vanish with the Rose!
That Youth's sweet-scented Manuscript should close!
The Nightingale that in the Branches sang,
Ah, whence, and whither flown again, who knows!

बहत्तर

हा, गुलाब के सँग अन्तर्हित हो जाता है सरस वसंत !
मधुमय मृदु यौवन–गाथा का सहसा कैसा होता अन्त !
वह कोकिल जो शाखाओं पर कल थी गायन में तल्लीन,
ज्ञात किसे, आ किस प्रदेश से हुई आज फिर कहाँ विलीन !

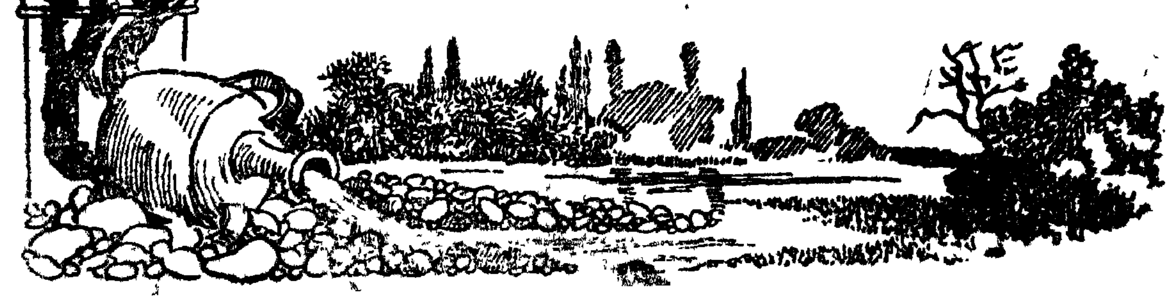

Seventythree

Ah, Love ! could thou and I with Fate conspire
To grasp this sorry Scheme of Things entire,
Would not we shatter it to bits—and then
Re-mould it nearer to the Heart's Desire !

तिहत्तर

आह,प्रिये ! कर -गत करने को अखिल प्रकृति का दुखद विधान
किसी तरह विधि से यदि मिल हम रच सकते षड्यंत्र महान;
छिन्न-भिन्न कर एकबार ही करते क्या न उसे निर्मूल !
निर्मित करते फिर निज कर से मनोकामना के अनुकूल !

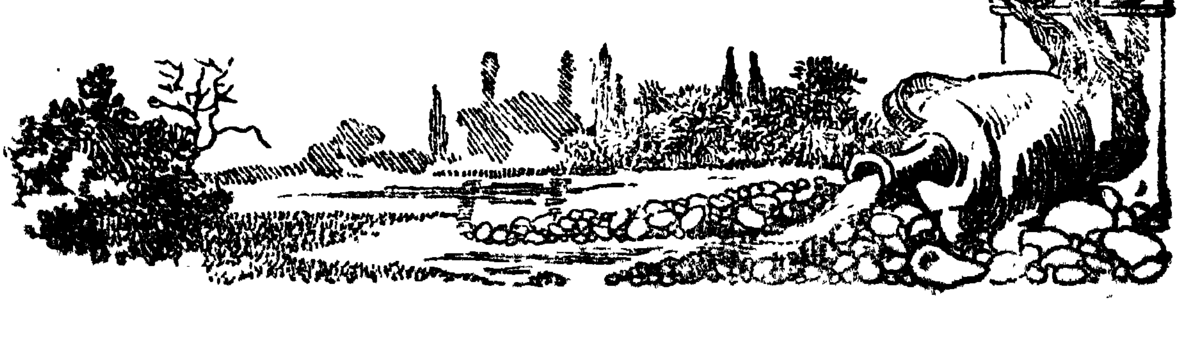

Seventyfour

Ah, Moon of my Delight who know'st no wane,
The Moon of Heav'n is rising once again:
How oft hereafter rising shall she look
Through this same Garden after me—in vain!

चौहत्तर

मेरे हर्षोल्लासवृन्द के हे अविनाशी चन्द्र अघट,
गगन-विहारी रजनी पति फिर अम्बर में हो रहा प्रकट,
कितनी बार इसी उपवन में होगा इसी तरह उत्थान,
किन्तु व्यर्थ ही होगा वह जब मैं कर जाऊँगा प्रस्थान!

Seventyfive

And when Thyself with shining Foot shall pass
Among the Guests Star-scattere'd on the Grass,
And in thy joyous Errand reach the Spot
Where I made one—turn down an empty Glass!

TAMAM SHUD

पचहत्तर

इन प्रदीप्त पद से तूभी जब प्रेयसि स्वयं करेगी पार
तारावलि सम दूर्वादल पर फैला हुआ अतिथि परिवार,
पहुँचे, जहाँ बैठा था मैं, मधु-वितरण में मतवाली,
मेरे लिए प्रिये तब खाली ही लौटा देना प्याली।

तमाम शुद

टिप्पणी

पृष्ट १ प्याले में पत्थर फेकना मरुस्थल में एक प्रकार का संकेत था जिसका अर्थ "घोड़े पर भागो" होता था।

२ प्रातः काल पूर्ण प्रकाश के पूर्व जो अरुण आभा क्षितिज में लगभग एक घंटे तक दिखलाई देती है उसे फ़ारसी में "सुबह काज़िब" कहते हैं। सुबह काज़िब का अर्थ झूठा प्रभात होता है। फारसी में उषा का अपने वाम कर का उठाना या बढ़ाना उसी झूठे प्रभात का आना बतलाता है। अनुवादक ने अपने अनुवाद में अरुण शब्द का प्रयोग किया है जो स्वयँ सूर्य का सारथी है और अरुणोदय "सुबह काज़िब" का अच्छा तथा सच्चा अनुवाद भी। उसी प्रकार "सुबह सादिक़" (सच्चा प्रभात) का अनुवाद सूर्योदय होगा। अरुण का अँगड़ाना पद्य में प्राण डाल देता है। अँगड़ाना शब्द निद्राभंग अतएव प्रात की पुष्टि करता है। अँगड़ाई लेने में हाथ का उठ जाना भी स्वाभाविक है। अँगड़ाते अरुण का स्पष्ट चित्र आँखों में झूलने लगता है।

४ एक बार बालक मूसा की कठिन परीक्षा ली गई। एक ओर गुलाब का फूल था, दूसरी ओर आग का अंगार। भला, भोले बालक को क्या भाता? मूसा ने अपने खेल की सामग्री उसी आग के अंगार को बना लिया। फल-स्वरूप हाथ जल गया। किन्तु दैविक शक्ति ने हज़रत मूसा के जले हाथ में एक धवल ज्योति पैदा कर दी।

ईसा में मुर्दों को जिला देने की शक्ति थी इसीलिये वे मसीह कहलाते हैं। कवि ने ईसा की श्वास तथा मूसा के धवल करतल द्वारा सरस वसँत के शुभागमन की घोषणा की है। स्मरण रखना होगा फारस में ऋतुराज ही नूतन वर्षाभिनंदन करते हैं। अनुवादक ने ईसा की श्वास के साथ जीवन-प्रद और उसी तरह धवल करतल के साथ प्रकाश शब्द का प्रयोग कर उनके भिन्न भिन्न गुणों को स्पष्ट कर दिया है जिससे पाठकों को समझने में सुभीता होगा।

५ इरम—बाग विशेष; इसे शद्दाद नामक बादशाह ने लगवाया था । यह अपने गुलाबों के लिये प्रसिद्ध है । कहते हैं यह अरब की रेत में कहीं समा गया है । कुछ लोगों का कहना है यह आज भी अदन में विद्यमान होते हुए भी इन आँखों को नहीं दिखाई देता । कवि ने इरम का उल्लेख उसके गुलाबों के लिये ही किया है ।

फ़ारस में जमशेद नाम का एक बादशाह हुआ है । उसने एक प्याला बनवाया था । यह उसे दूरबीन का काम देता था । इसमें सात्त चक्कर थे। एक चक्कर एकद्वीप का हाल बतलाता था। जामे जमेशद के नाम से यह प्याला प्रसिद्ध है । हम उसे "विश्वदर्पण" कह सकते हैं ।

६ दाऊद—इस्लाम तथा ईसाई धर्मानुयाइयों के एक पैगम्बर । गान विद्या में भी यह भारत के तानसेन थे ।

हमारे यहाँ जिस प्रकार किसी समय देववाणी संस्कृत का प्रयोग बोलचाल में होता था उसी प्रकार फ़ारस में जिस प्राचीन शुद्ध एवम् अमर गिरा का उपयोग होता था उसे "पहलवी" कहते हैं । अनुवाद में पहलवी के लिये 'शुद्ध देववाणी' रखा गया है ।

८ कैकोबाद—फारस का सम्राट विशेष ।

९ कैखुसरू—फारस के एक सम्राट का नाम ।

रुस्तम—फ़ारस का प्रसिद्ध बलशाली वीर तथा योद्धा जिसे हम भारतीय भीम कह सकते है ।

हातिमताई—अपनी अनुपम दानशीलता के लिये विख्यात, अरब का एक लक्षाधीश । परोपकार तथा प्रेम का प्रसिद्ध पुजारी जिसके समस्त जीवन का एक मात्र आदर्श अभ्यागत का आदर और आतिथ्य ही था। दानी दधीच या दानवीर कर्ण कहकर हम उसे याद कर सकते हैं ।

१७ बहराम—फारस का एक बादशाह जो गोर (Zebra) की शिकार के लिये प्रसिद्ध है । गोर की इसी आखेट-प्रियता के कारण उसका नाम बहरामगोर पड़ गया है ।

१७ शनिका उच्चस्थान–फारसवालों के मत के अनुसार सात स्वर्ग–लोक हैं। प्रत्येक लोक का अधिष्ठाता एक एक गृह है। सातवें स्वर्ग का मालिक इनके यहाँ शनि माना जाता है।

४६ इस पद्य में उस प्रसिद्ध कँदील का वर्णन है जिसे "फानूस खयाल" कहते हैं। यह षटकोण या गोलाकार होता है। कँदील के बीच में एक मोमबत्ती जलती रहती है। कागज़ का एक पट्टा जिस में हाथी, घोड़ा, ऊँट की आकृति कटी रहती है उसके चारों ओर फिरा रहता है। बाहर कँदील में पतला कागज़ लगा रहता है। हलकी सी हवा आने के लिये कुछ जगह कर दी जाती है। हवा के बेग से जब वह घोड़ा हाथीवाला भीतरी पट्टा घूमता है तब कँदील की बाहरवाली पतली कागज़ी दीवाल पर उसकी छाया पड़ती है और हाथी घोड़ा इत्यादि चलते फिरते तथा चक्कर खाते मालूम पड़ते हैं।

५९—ईद–मुसलमानों का प्रसिद्ध त्योहार।

DELHI UNIVERSITY LIBRARY,

शब्द-कोष

१ मधु-भाजन = मदिरा का पात्र।

मृगयाचारी = शिकारी।

प्रासाद-शिखर = मीनार।

४ विरस = रसहीन; पुरानी।

वासना = कामना; इच्छा।

७ मधु = वसन्त।

सिहरना = काँपना, यहाँ, जागना।

बालक वसन्त = नव वसन्त।

११ कदम्ब = वृक्ष विशेष; श्रीकृष्ण का प्रियपेड़; हम इसे यहाँ साधारण वृक्ष के अर्थ में भी ले सकते हैं।

भ्रमर-गीत = वह काव्य जिसमें उद्धव के प्रति ब्रज की गोपियों का उलाहना हो। यहाँ केवल सरस और मधुर काव्य-ग्रन्थ के अर्थ में लिया जा सकता है।

कूजित = मुखरित; ध्वनित, गूँजा हुआ।

नन्दनवन = स्वर्ग।

१२ मधुमय = मधुर।

१३ पाटल = गुलाब

१८ रक्तफूल = अड़हुल का फूल; जवापुष्प

मधुपुष्प = अशोक वृक्ष; यहाँ अशोक के फूल के अर्थ में प्रयुक्त है।

गत मधुमुख—वह सुख जो किसी समय सुन्दर था।

१९ हरित = हरियाली।

जलमाला का अधर प्रान्त = सरिता-तट; नदीका किनारा।

तन्वि = कृषाङ्गी; सुकुमारी। (सम्बोधन)

उच्छ्वसित = पैदा हुई; उत्थित; विकसित।

२० विशद = विशादरहित; विमल; स्वच्छ।

मधुबाले = साक़ी (सम्बोधन); अयि शराब पिलाने वाली।

मद = मदिरा।

२२ मनोज्ञ = सुन्दर।

२६ अलीक = बे सिर पैर का।

३३ विभ्रान्त = भटकता हुआ; चक्कर में पड़ा हुआ; विभ्रमयुक्त ।

धारणा = बुद्धि; समझने की शक्ति, ग्रहण अथवा धारण करने की वृत्ति ।

३५ क्षणस्थायी = उड़ता हुआ, पलभर ठहरने वाला ।

विनिमय = लेन-देन; आदान-प्रदान ।

४० मधुउत्सव = वह उत्सव जिस में मित्रों को आमन्त्रित कर आमोद प्रमोद के साथ मधु-पान किया जाय । यहाँ वसन्तोत्सव का अर्थ नहीं है ।

४२ सुरालय द्वार = सराय का दरवाजा ।

द्राक्षारस = अँगूरी शराब ।

४३ मध्वासव = महुआ या अँगूर की शराब ।

४९ पराभूत कर = पराजित कर; हारा हुआ बनाकर ।

५१ अटल लेख = विधि-विधान; भाग्य-लेख ।

शुचिता = शुद्धता; पवित्रता ।

पटुता = निपुणता; चतुराई ।

५२ अम्बर = आकाश

अम्बरीष = बछेड़ा; बैल

लक्ष्य-गृह = वासस्थान ।

५३ लव = फसल; कटाई; विनाश ।

लेखा = गणना; हिसाब-किताब; न्याय दिवस ।

६० मृण्मय = मिट्टी का ।

वाचाल = अधिक बोलने वाला; यहाँ बोलने वाला का अर्थ है ।

कुलाल = कुम्हार ।

६१ मूर्त आधार = वह पदार्थ जिसको लेकर किसी मूर्ति की रचना की जाती है ।

प्राकृत = स्वाभाविक ।

६४ साक़ी = शराब पिलाने वाला ।

६७ उत्सेक = सिंचन

मृत-स्नान-अभिषेक = वह पवित्र तथा धार्मिक स्नान जो शव को जलाने अथवा गाड़ने के पूर्व दिया जाता है ।

बाना = वेशभूषा ।

मधुवन = सुग्रीव का वह बगीचा जो अँगूर के लिए प्रसिद्ध था । कृष्ण का प्रिय क्रीड़ा-स्थल । हम उसे शराब का वन अर्थात् अँगूर के बगीचे के अर्थ में ले सकते हैं ।

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	३	फ़िट्ज़रेल्ड	फ़िट्ज़जेरेल्ड
१९	५	फ़िट्ज़रेल्ड	फ़िट्ज़जेरेल्ड
२३	१९	केन्द	केन्द्र
२४	१६	सम्पत्ति	सम्पत्ति
२५	२४	पंचाग	पंचाङ्ग
२५	२५	पंचाग	पंचाङ्ग
२६	१३	ग्रथ	ग्रन्थ
२७	२६	धामिक	धार्मिक
२९	१५	यर	पर
३२	४	हैं	है
नौ	४	रुस्तम	हातिम
ग्यारह	१	में	मैं
बीस	४	मैं	–
इकतालीस	१	में	मैं
बयालीस	१	था	थी
बयालीस	२	देवदूत	सुरबाला
तिरसठ	२	कुरुपतर	कुरूपतर
७७	१६	अनुबाद	अनुवाद
८०	२०	यहां बोलने वाला	यहां बोलने वाले

समाप्त